arihant

Only & Only NCERT

इसे कर लिया तो NCERT मुट्ठी में...

NCERT MCQs

भारतीय इतिहास

Class 6-12 (Old+New)

UPSC, State PSCs

एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यंत उपयोगी...

Only & Only NCERT

इसे कर लिया तो NCERT मुट्ठी में...

NCERT MCQs

भारतीय इतिहास

Class 6-12 *(Old+New)*

UPSC, State PSCs

एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यंत उपयोगी...

लेखक

राजन शर्मा

प्रवीण कुमार तिवारी

विकास कुमार सिंह

सम्पादक

राजेश राजन

arihant

अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

arihant
अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड
सर्वाधिकार सुरक्षित

卐 © प्रकाशक

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके—इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरण नहीं किया जा सकता है। 'अरिहन्त' ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, सम्पादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं हैं।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'मेरठ' होगा।

卐 रजि. कार्यालय

'रामछाया' 4577/15, अग्रवाल रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002
फोन: 011-47630600, 43518550

卐 मुख्य कार्यालय

कालिन्दी, टी०पी० नगर, मेरठ (यूपी)– 250002 **फोन:** 0121-7156203, 7156204

卐 शाखा कार्यालय

आगरा, अहमदाबाद, बरेली, बंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, झाँसी, कोलकाता, लखनऊ, नागपुर तथा पुणे

PO No : TXT-XX-XXXXXXX-X-XX

PUBLISHED BY ARIHANT PUBLICATIONS (INDIA) LTD.

'अरिहन्त' की पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट **www.arihantbooks.com** पर लॉग इन करें या **info@arihantbooks.com** पर सम्पर्क करें।

Follow us on...

9789325798595

आपकी सफलता
हमारी प्रतिबद्धता...

"अपनी कमजोरियों को अपनी ताकत बनाओ फिर 'आईएएस' का सपना आँखों में सजाओ"

सिविल सेवा परीक्षा भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित, कठिन एवं चुनौतीपूर्ण परीक्षा है। इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाला अभ्यर्थी न केवल उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, बल्कि सिविल सेवक के रूप में देश एवं समाज के विकास में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

भारत में सिविल सेवा की परीक्षा इसलिए भी कठिन और चुनौतीपूर्ण हो जाती है कि इसमें "कितना पढ़ना है" से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है "क्या पढ़ना है" अर्थात् इस परीक्षा में सफल होने के लिए प्रामाणिक एवं प्रासंगिक अध्ययन–सामग्री का अध्ययन अति आवश्यक हो जाता है।

सफल अभ्यर्थियों के अनुभवों तथा विगत् वर्षों के प्रश्न–पत्रों के विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ है कि इस परीक्षा में **NCERT की पुस्तकों** का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इन्हीं पुस्तकों को आधार बनाकर सामान्य अध्ययन के प्रश्नों को परीक्षा में पूछा जाता है। **NCERT के तथ्यों** से प्रत्येक वर्ष सीधे प्रश्न पूछे जा रहे हैं।

इसके साथ–ही–साथ NCERT की पुस्तकों में **बेसिक कॉन्सेप्ट्स** बहुत ही सरल तरीके से समझाए गए हैं, जोकि विषय सम्बन्धी ज्ञान को और मजबूत बनाते हैं।

NCERT पुस्तकों के अध्ययन को आसान तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु 'अरिहन्त पब्लिकेशन्स' द्वारा **'NCERT MCQs'** सीरीज तैयार की गई है। इस सीरीज में कक्षा 6 से 12 तक की पुरानी व नई **NCERT का कवरेज वस्तुनिष्ठ प्रश्नों** के रूप में किया गया है।

पुस्तक में प्रश्नों का स्तर सिविल सेवा एवं विभिन्न लोक सेवा आयोगों की प्रारम्भिक परीक्षाओं के अनुरूप रखा गया है। इस पुस्तक में **प्रश्नों को अध्यायवार रूप** में रखा गया है, जिससे अभ्यर्थी को NCERT पुस्तक के सम्बन्धित विषय के सम्पूर्ण अध्ययन का ज्ञान प्राप्त हो सके। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में NCERT की कक्षा के अनुसार पुस्तकों का विवरण तथा प्रत्येक प्रश्न में कक्षा आदि का स्रोत दिया गया है, जिससे प्रश्नों का क्रम विषय अनुसार बन सके। प्रश्नों के हल के साथ उनकी **विस्तृत एवं तथ्यपरक व्याख्या** भी दी गई है, जो आपके अध्ययन को बेहतर बनाने में सहायक होगी। इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह शत्–प्रतिशत NCERT की पुस्तकों पर आधारित है।

पुस्तक के अन्त में **तीन प्रैक्टिस सेट्स** दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश प्रश्न विगत् वर्षों की सिविल सेवा एवं विभिन्न लोक सेवा आयोगों की प्रारम्भिक परीक्षाओं में पूछे गए हैं। इस पुस्तक को गुणवत्तापूर्ण बनाया गया है, जिससे यह सम्पूर्ण सीरीज निश्चय ही आपकी तैयारी में रामबाण का कार्य करेगी।

इस सीरीज को पूरा करने में विशेषज्ञों की एक टीम ने उत्साह के साथ कार्य किया है। इस पुस्तक के संकलन में विशेषज्ञों के साथ–साथ प्रोजेक्ट मैनेजमेण्ट टीम का भी विशेष योगदान रहा, जिसमें मोना यादव (प्रोजेक्ट मैनेजर), कीर्ति शर्मा (प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर), पूनम सैनी, शशि (प्रूफ रीडर्स), रवि सागर, शिवम (डीटीपी ऑपरेटर) और शानू एवं मजहर (कवर एवं इनर डिजाइनर) प्रमुख हैं।

आशा है कि सिविल सेवा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थी इस पुस्तक का अध्ययन कर अपने लक्ष्य को निश्चित ही प्राप्त करेंगे। आपके उपयोगी सुझाव सदैव हमें बेहतर संस्करण बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। इसलिए आप हमें अपने सुझाव अवश्य भेजें, जिनके आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करण को और भी बेहतर बना सकें।

लेखक

विषय-सूची

प्राचीन इतिहास

अध्याय 1. ऐतिहासिक स्रोत **1-8**
- पुरातात्विक स्रोत 1
- साहित्यिक स्रोत 2
- इतिहास लेखन 5
- विविध 6

अध्याय 2. प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ **9-16**
- पाषाणकालीन संस्कृतियाँ 9
- ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियाँ 13

अध्याय 3. सिंधु घाटी सभ्यता **17-25**
- उद्‌भव एवं विस्तार 17
- नगर योजना 18
- प्रमुख स्थल 19
- आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन 21
- कला एवं शिल्प 24
- सभ्यता का पतन 25

अध्याय 4. वैदिक युग **26-34**
- आर्यों का मूल स्थान एवं प्रसार 26
- ऋग्वैदिक काल 28
- वेद 31
- उत्तरवैदिक काल 32

अध्याय 5. धार्मिक आंदोलन **35-41**
- जैन धर्म 35
- बौद्ध धर्म 37
- विविध 40

अध्याय 6. महाजनपद **42-47**
- महाजनपदों का विकास 42
- मगध 44
- विदेशी आक्रमण 46

अध्याय 7. मौर्यकाल **48-53**
- मौर्य शासकों का विवरण 48
- प्रशासन/अर्थव्यवस्था/समाज/कला 51

अध्याय 8. मौर्योत्तर काल **54-61**
- देशी राजवंश 54
- विदेशी राजवंश 57

अध्याय 9.	**गुप्त काल**	**62-69**
	• गप्तवंश का उद्‌भव एवं विकास	62
	• प्रमुख शासक	63
	• गुप्तकालीन प्रशासन	64
	• गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था	66
	• गुप्तकालीन समाज	66
	• गुप्तकालीन धार्मिक व्यवस्था	67
	• गुप्तकालीन कला/साहित्य विज्ञान	68
	• पतन	69
अध्याय 10.	**गुप्तोत्तर काल**	**70-79**
	• गुप्तोत्तर कालीन राजवंश	70
	• उत्तर भारत में राजवंश (हर्ष के बाद)	74
	• राष्ट्रकूट	76
	• आर्थिक तथा सामाजिक जीवन, शिक्षा और धार्मिक विश्वास	77
अध्याय 11.	**दक्षिण भारत का इतिहास**	**80-88**
	• संगम युग	80
	• चोल साम्राज्य (9वीं से 12वीं सदी तक)	86
अध्याय 12.	**प्राचीन भारत के विविध पहलू**	**89-95**
	• दर्शन	89
	• धर्म	90
	• कला तथा समाज	92
	• अर्थव्यवस्था	94
	• विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	94

मध्यकालीन इतिहास

अध्याय 13.	**भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण**	**96-101**
	• भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण	96
	• महमूद गजनवी	97
	• मुहम्मद गौरी	99
अध्याय 14.	**दिल्ली सल्तनत**	**102-116**
	• गुलाम वंश	102
	• खिलजी वंश	105
	• तुगलक वंश	108
	• सैयद और लोदी वंश	111
	• दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था	112

- सल्तनतकालीन आर्थिक स्थिति 113
- सल्तनतकालीन सामाजिक व्यवस्था 114
- सल्तनतकालीन कला एवं संस्कृति 115

अध्याय 15. विजयनगर, बहमनी एवं अन्य प्रांतीय राज्य 117-128

- विजयनगर साम्राज्य 117
- बहमनी साम्राज्य 123
- विजयनगर बहमनी संघर्ष 124
- अन्य प्रांतीय राज्य पूर्वी भारत : बंगाल, असम और उड़ीसा 125
- पश्चिमी भारत : गुजरात, मालवा और मेवाड़ 126
- उत्तर पश्चिमी और भारत ः शर्की और कश्मीर 127

अध्याय 16. भक्ति और सूफी आंदोलन 129-140

- भक्ति आंदोलन 129
- प्रमुख संत 130

अध्याय 17. मुगल साम्राज्य 141-165

- बाबर 141
- हुमायूँ 144
- शेरशाह 145
- अकबर की राजपूत नीति 151
- अकबर का साम्राज्य विस्तार 152
- अकबर के सुधार 152
- जहाँगीर 154
- शाहजहाँ 155
- औरंगजेब 155
- मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था 157
- मुगलकालीन सामाजिक व्यवस्था 160
- मुगलकालीन आर्थिक व्यवस्था 161
- मुगलकालीन कला एवं संस्कृति 163

अध्याय 18. मुगल साम्राज्य का पतन 166-170

अध्याय 19. मराठा राज्य और संघ 171-175

- मराठा शक्ति का अभ्युदय 171
- शिवाजी का उदय 172
- मराठा प्रशासन 174
- पेशवाओं के अधीन मराठा 174

आधुनिक भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

अध्याय 20. उत्तर मुगल (18वीं सदी) तथा प्रांतीय शक्तियों का उदय **176-184**
- उत्तरवर्ती मुगल 176
- प्रांतीय शक्तियों का उदय 178
- हैदराबाद 179
- अवध 180
- मैसूर 180
- केरल 181
- राजपूत राज्य 181
- सिख 182
- मराठा 182
- 18वीं सदी के लोगों का सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन 183

अध्याय 21. भारत में यूरोपीय शक्ति का आगमन **185-193**
- भारत में यूरोपीयों का प्रवेश 185
- ब्रिटिश का साम्राज्य विस्तार 188

अध्याय 22. ब्रिटिश काल की प्रशासनिक एवं आर्थिक नीतियाँ **194-199**
- भारत में अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ 194
- यातायात और संचार के साधनों का विकास 195
- स्थायी बंदोबस्त 196
- रैयतवाड़ी व्यवस्था 196
- महालवाड़ी व्यवस्था 197
- कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य 197

अध्याय 23. प्रमुख विद्रोह (आदिवासी एवं किसान आंदोलन) **200-204**
- जनजातीय आंदोलन 200
- किसान आंदोलन 202
- नागरिक विद्रोह/अपदस्थ शासक/जमींदार 202
- विविध 204

अध्याय 24. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन **205-212**
- समाज सुधार आंदोलन 205
- मुस्लिम, पारसी और सिख सुधार 209
- महिला शिक्षा और महिला संबंधी अन्य सुधार 210
- सांस्कृतिक जागरण एवं अन्य सुधार 211

अध्याय 25. 1857 का विद्रोह **213-219**
- विद्रोह का कारण 213

अध्याय 26. भारत का स्वाधीनता संग्राम : प्रथम चरण (1885–1915 ई.) **220-228**
- राष्ट्रवाद का उदय/कांग्रेस पूर्व संगठन 220
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 222
- स्वदेशी आंदोलन 226
- क्रांतिकारी आंदोलन : प्रथम चरण 228
- मुस्लिम लीग 228

अध्याय 27. भारत का स्वाधीनता संग्राम : द्वितीय चरण (वर्ष 1915–1935) **229-236**
- गाँधीवादी आंदोलन एवं अन्य घटनाएँ 229
- क्रांतिकारी आंदोलन द्वितीय चरण 235

अध्याय 28. भारत का स्वाधीनता संग्राम : तृत्तीय चरण (वर्ष 1935–1947) **237-243**

अध्याय 29. गवर्नर जनरल और वायसराय **244-248**

अध्याय 30. स्वतंत्रता के बाद **249-250**

कला एवं संस्कृति

अध्याय 31. चित्रकला **251-253**

अध्याय 32. मूर्तिकला **254-256**
- मूर्तिकला 254

अध्याय 33. वास्तुकला एवं स्थापत्य कला **257-263**

अध्याय 34. संगीत और नृत्य **264-265**

अध्याय 35. भाषा एवं साहित्य **266-268**

प्रैक्टिस सेट्स **269-279**
- प्रैक्टिस सेट 1 271-273
- प्रैक्टिस सेट 2 274-276
- प्रैक्टिस सेट 3 277-279

01

ऐतिहासिक स्रोत

New NCERT Class VI क्या, कब, कहाँ और कैसे, खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर,
Old NCERT Class XI प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व, प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक,
New NCERT Class XII स्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण, भौगोलिक ढाँचा, राजा, किसान और नगर

पुरातात्विक स्रोत

1. प्राचीनकालीन स्थलों के उत्खनन के संबंध में निम्नलिखित कथनों में कौन-सा असत्य है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

(a) पश्चिमोत्तर भारत में नगरों की स्थापना 2500 ई. पू. में हुई थी।
(b) केवल उत्तर भारत में शव के साथ औजार भी मिले हैं।
(c) उत्खनन से किसी संस्कृति की भौतिक अवस्था उद्घाटित होती है।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर *(b)*

व्याख्या प्राचीनकालीन स्थलों के उत्खनन के संबंध में कथन (b) असत्य है, क्योंकि न केवल उत्तर भारत में बल्कि दक्षिण भारत में शवों के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बर्तन आदि को दफनाने का प्रचलन था। इन कब्रों के ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर दिए जाते थे, जिसे महापाषाण कहा जाता था।

पश्चिमोत्तर भारत में रोपड़ (पंजाब), माँडा (जम्मू कश्मीर) आदि स्थलों के उत्खननों से ऐसे नगरों की जानकारी मिलती है, जिनकी स्थापना 2500 ई. पू. में हुई थी। उत्खनन से प्राचीन काल के लोगों के भौतिक जीवन के संबंध में जानकारी मिलती है, जिसे पुरातत्व (आर्कियोलॉजी) विज्ञान के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

2. प्राचीन सिक्कों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

1. आरंभिक सिक्कों पर प्रतीक चिह्न मिलते हैं।
2. बाद के सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम मिलते हैं।
3. सिक्कों के आधार पर राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3
(d) 2 और 3

उत्तर *(c)*

व्याख्या प्राचीन सिक्कों के संबंध में दिए गए सभी कथन सत्य हैं। प्राचीन सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहा जाता है। प्राचीन काल में धातु मुद्रा या सिक्का ही प्रचलन में था, जिसे आहत मुद्रा कहते थे। इन मुद्राओं पर वृक्ष, देवी-देवताओं और जंगली जानवरों आदि के प्रतीक चिह्न और संकेतकों के भी चिह्न मिले हैं।

प्राचीन काल में कुछ सिक्के ऐसे भी मिले हैं, जिन पर राजाओं और देवताओं के नाम तथा तिथियाँ उल्लिखित हैं।

ऐसे सिक्कों में गुप्त शासक समुद्रगुप्त के अश्वमेध तथा वीणावादन प्रकार के सिक्के एवं कनिष्क के सिक्कों पर शिव की आकृति आदि मिली है। इन सिक्कों की सहायता से राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण, मुद्राशास्त्रियों द्वारा किया जाता है।

3. अभिलेखों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

1. अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।
2. कार्पस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम् में केवल मौर्यकाल के अभिलेखों को प्रकाशित किया गया है।
3. अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी एवं अरमाइक लिपि में मिलते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 3
(b) 1 और 2
(c) 2 और 3
(d) केवल 2

उत्तर *(a)*

व्याख्या अभिलेखों के संबंध में दिए गए कथनों में से कथन (1) और (3) सत्य हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों में सिक्कों की अपेक्षा अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके अध्ययन को पुरालेखशास्त्र या एपिग्राफी कहा जाता है। अभिलेख मुख्यत: मुहरों, स्तूपों, प्रस्तरस्तंभों, चट्टानों, ताम्रपत्रों, मंदिर की दीवारों तथा ईंटों या मूर्तियों पर पाए जाते हैं।

अशोक के अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में मिले हैं, जो बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। उनमें से कुछ खरोष्ठी लिपि के अभिलेख भी हैं, जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान और अफगानिस्तान से मिले अशोक के अभिलेखों में यूनानी और अरमाइक लिपियों का भी प्रयोग हुआ है।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि कार्पस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम् नामक ग्रंथमाला में केवल मौर्यो के ही नहीं, बल्कि मौर्योत्तर तथा गुप्तकाल के अधिकांश अभिलेखों को भी संकलित कर प्रकाशित किया गया है।

4. सम्राट अशोक के राज्यादेशों का सबसे पहले विकूटन (डिसाइफर) किसने किया था? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT), (IAS Pre 2016)*

(a) जॉर्ज व्यूलर (b) जेम्स प्रिंसेप
(c) मैक्स मूलर (d) विलियम जोन्स

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या सम्राट अशोक के राज्यादेशों का सबसे पहले विकूटन (डिसाइफर) 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने किया। अशोक के शिलालेख तीसरी शताब्दी ई.पू. के हैं। जेम्स प्रिंसेप बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में उच्च पद आसीन एक ब्रिटिश अधिकारी था। अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, ग्रीक, अरमाइक तथा खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण थे, जिनकी भाषा सामान्यतया प्राकृत थी।

5. अपने शिलालेखों में अशोक सामान्यत: किस नाम से जाने जाते हैं? *(Chap 2, Class-XII, New NCERT), (BPSC Pre 2019), (MPPSC Pre 2015)*

(a) चक्रवर्ती (b) प्रियदर्शी
(c) धर्मदेव (d) धर्मकीर्ति

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या अपने शिलालेखों में अशोक को सामान्यत: प्रियदर्शी (पियदस्सी) नाम से उल्लेखित किया गया है। प्रियदर्शी का अर्थ है— 'मनोहर मुखाकृति वाला'। मास्की तथा गुजर्रा शिलालेखों में राजा का नाम 'असोक' (अशोक) लिखा है।

अशोक के शिलालेख भारत की प्रत्येक दिशा में बड़ी संख्या में उत्कीर्ण कराए गए थे।

साहित्यिक स्रोत

6. प्राचीन काल में साहित्यिक स्रोत के संबंध में कौन-सा कथन असत्य है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

(a) भारत में पांडुलिपियाँ भोजपत्रों और तामपत्रों पर लिखी मिलती हैं।
(b) मध्य एशिया में पांडुलिपियाँ मेषचर्म तथा काष्ठफलकों पर लिखी मिलती हैं।
(c) भारत में अधिकतर पांडुलिपियाँ उत्तर प्रदेश से प्राप्त हुई हैं।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या प्राचीन काल के साहित्यिक स्रोत के संबंध में कथन (c) असत्य है, क्योंकि भारत में अधिकतर पांडुलिपियाँ उत्तर प्रदेश से नहीं, बल्कि दक्षिण भारत, कश्मीर और नेपाल से प्राप्त हुई हैं।

भारत में पांडुलिपियाँ, भोजपत्रों और तामपत्रों पर लिखी मिलती हैं, परंतु मध्य एशिया में, जहाँ भारत से प्राकृत भाषा का प्रसार हुआ था, वहाँ ये पांडुलिपियाँ मेषचर्म तथा काष्ठफलकों पर भी लिखी गई हैं। वर्तमान में अधिकांश अभिलेख संग्रहालयों में और पांडुलिपियाँ पुस्तककालयों में संचित तथा सुरक्षित हैं।

7. साहित्यिक स्रोत के रूप में वेदों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

1. सभी वैदिक ग्रंथों में बाद में जोड़े गए तथ्य मिलते हैं।
2. ऋग्वेद में मुख्यत: देवताओं की स्तुतियाँ हैं।
3. वैदिक साहित्यों में कर्मकांड और पौराणिक आख्यान का वर्णन नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या साहित्यिक स्रोत के रूप में वेदों के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। साहित्यिक स्रोतों के रूप में वेदों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह भारत की साहित्यिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में वर्णन करता है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन है, जिसका कालखंड 1500-1000 ई. पू. के लगभग का है तथा अन्य वेदों का कालखंड 1000-500 ई. पू. के लगभग का है। प्राय: सभी वैदिक ग्रंथों में क्षेपक (बाद में जोड़े गए तथ्य) मिलते हैं, जो प्रारंभ अथवा अंत में होते हैं।

ऋग्वेद में मुख्यत: देवताओं की स्तुतियाँ वर्णित हैं, जबकि उपनिषदों में हमें दार्शनिक चिंतन का उल्लेख मिलता है।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि ऋग्वेद के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्यों में स्तुतियों के साथ-साथ कर्मकांड, जादू-टोना और आख्यानों का विवरण मिलता है।

8. निम्नलिखित में किसको पुराणों के चार युग में शामिल किया जाता है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

1. निरुक्त 2. कृत
3. त्रेता 4. द्वापर
5. कलि

कूट

(a) 1, 2, 3 और 4 (b) 2, 3, 4 और 5
(c) 1, 3, 4 और 5 (d) इनमें से कोई नहीं

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या पुराणों में शामिल युग हैं कृत → त्रेता → द्वापर → कलि। पुराणों में दिए गए चार युगों में निरुक्त को शामिल नहीं किया जाता है, क्योंकि यह एक वेदांग है।

पुराणों के अनुसार, प्रत्येक युग अपने पिछले युग की अपेक्षा बेहतर नहीं रहा और कहा गया है कि एक युग के बाद जब दूसरा युग आरंभ होता है, तब नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों का अध:पतन होता है।

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-XII, New NCERT), (CGPSC Pre 2017)*

1. हरिषेण समुद्रगुप्त के दरबार का प्रसिद्ध कवि था।
2. उसने 'देवी चंद्रगुप्तम्' काव्य की रचना की।
3. यह प्रयाग प्रशस्ति का भी रचयिता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1, 2 और 3 (b) 1 और 2
(c) 2 और 3 (d) 1 और 3

↗ **उत्तर** *(d)*

व्याख्या दिए गए कथन में से कथन (1) और (2) सत्य हैं। हरिषेण, गुप्तवंशीय शासक समुद्रगुप्त के दरबार में रहने वाला राजकवि था, जो संस्कृत में रचनाएँ करता था। वह प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में स्थित 'प्रयाग प्रशस्ति' का रचनाकार था। इसने काव्यात्मक विशिष्टता के साथ इसकी रचना की थी, जिसमें समुद्रगुप्त के व्यक्तित्व तथा विजयों का विवरण था।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि 'देवी चंद्रगुप्तम्' विशाख दत्त की प्रसिद्ध रचना है।

10. कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी निम्नलिखित में से किससे संबंधित है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT), (MPPSC Pre 2012)*

(a) चंद्रगुप्त के शासन से
(b) गीतों के संकलन से
(c) कश्मीर के इतिहास से
(d) कृष्णदेव राय के शासन से

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी, कश्मीर के इतिहास से संबंधित है। 'राजतरंगिणी' जिसका अर्थ 'राजाओं की धारा' है। कल्हण ने राजतरंगिणी की रचना 12वीं शताब्दी में की। यह संस्कृत भाषा की रचना है।

इसमें कश्मीर के शासकों के चरित्रों का संग्रह है। यह ऐतिहासिक लेखन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यह पहली कृति है, जिसमें आधुनिक काल के इतिहास लेखन के लक्षण मौजूद हैं।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

	वेदांग	अर्थ
(a)	शिक्षा	उच्चारण विधि
(b)	कल्प	कर्मकांड
(c)	निरुक्त	भाषा विज्ञान
(d)	छंद	युद्ध कला

↗ **उत्तर** *(d)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (d) सही सुमेलित नहीं है। छंद से तात्पर्य पद्यों को चरणबद्ध तरीके से वर्णों के निश्चित मान के अनुसार लिखे जाने से है। अत: इसका संबंध कविता की लेखन शैली से है न कि युद्ध कला से।

वेद के मुख्यत: छह अंग हैं, जिन्हें 'वेदांग' कहा जाता है। इनके माध्यम से वैदिक मूलग्रंथों का अर्थ समझाने का प्रयास किया गया है, उन्हें वेदांग कहते हैं, जो इस प्रकार हैं- शिक्षा (उच्चारण विधि), कल्प (कर्मकांड), निरुक्त (भाषा विज्ञान), छंद व्याकरण और ज्योतिष।

12. सूत्र लेखन का सबसे विख्यात उदाहरण निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक में दिया गया है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

(a) योगशास्त्र (b) अष्टाध्यायी
(c) महाभारत (d) राजतरंगिणी

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या पाणिनि द्वारा रचित सूत्र लेखन का सबसे विख्यात उदाहरण अष्टाध्यायी में दिया गया। इसकी रचना चौथी शताब्दी ई. पू. में की गई थी जो मूलत: एक व्याकरण ग्रंथ है। व्याकरण के नियमों का उदाहरण देने हेतु पाणिनि ने तत्कालीन समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के व्यापक पक्षों को उजागर किया है।

13. महाभारत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

1. यह दसवीं सदी ई. पू. से चौथी सदी ई. पू. तक की स्थिति का आभास देता है।
2. पहले इसमें 1000 श्लोक थे, इसे जय कहा जाता था।
3. बाद में 24000 श्लोक हो जाने से 'भारत' कहा गया।
4. एक लाख श्लोक होने पर इसका नाम महाभारत पड़ा।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1, 2 और 4 (b) 1, 2 और 3
(c) 1, 3 और 4 (d) 3 और 4

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या महाभारत के संबंध में कथन (1), (3) और (4) सत्य हैं। महाभारत धार्मिक साहित्य का एक प्रमुख स्रोत है, जिसे वेदव्यास द्वारा लिखा गया था। इस महाकाव्य में दसवीं सदी ई. पू. से चौथी शताब्दी ई. पू. तक की स्थिति का वर्णन मिलता है।

इस महाकाव्य में श्लोकों की संख्या 24,000 हो जाने की स्थिति में इसे 'भारत' नाम दिया गया, क्योकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।

इस महाकाव्य में अंतत: श्लोकों की संख्या एक लाख होने के पश्चात् इसे मूल रूप से महाभारत या शतसहस्री संहिता के नाम से जाना जाने लगा।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि महाभारत में पहले केवल 8800 श्लोक थे और इसे 'जय' कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ था-विजय संबंधी संग्रह ग्रंथ।

14. बौद्ध ग्रंथों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

1. प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए थे।
2. पालि भाषा कन्नौज या उत्तरी बिहार में बोली जाती थी।
3. महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ जातक कहलाती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) 1 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1 और 2

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या बौद्ध ग्रंथों के संबंध में कथन (1) और (3) सत्य हैं। प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथों को ईसा-पूर्व दूसरी सदी में अंतिम रूप से श्रीलंका में संकलित किया गया था। बौद्ध ग्रंथों के धार्मिक शिक्षा से संबंधित अंश बुद्ध के समय की स्थिति का बोध कराते हैं। ये बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए थे।

बौद्धों के धार्मिक साहित्य में सबसे महत्त्वपूर्ण और रोचक तथ्य महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ हैं। ये कथाएँ जातक कहलाती हैं।

ये जातक कथाएँ एक प्रकार की लोक कथाएँ हैं, जो ईसा पूर्व पाँचवीं सदी से दूसरी सदी ईस्वी सन् तक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालती हैं।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि पालि भाषा कन्नौज या उत्तरी बिहार में नहीं, बल्कि मगध अर्थात दक्षिणी बिहार में बोली जाती थी।

15. जैन साहित्यिक स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

1. जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में हुई थी।
2. ईसा की आठवीं सदी में वल्लभी में उन्हें संकलित किया गया।
3. जैन ग्रंथों में व्यापार और व्यापारियों के उल्लेख बार-बार मिलते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3
(d) 1 और 2

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या जैन साहित्यिक स्रोतों के संबंध में कथन (1) और (3) सत्य हैं।

बौद्ध ग्रंथ के साथ-साथ जैन ग्रंथ भी एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत रहे हैं, जिनकी रचना प्राकृत भाषा में की गई है।

जैन ग्रंथों के अनेक ऐसे अंश हैं, जिनके आधार पर हमें महावीर कालीन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक, इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता प्राप्त होती है। इस ग्रंथ में व्यापार और व्यापारियों से संबंधित उल्लेख बार-बार मिलते हैं।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि ईसा की आठवीं सदी में नहीं, बल्कि छठी सदी में गुजरात के वल्लभी नगर में जैन ग्रंथों को अंतिम रूप से संकलित किया गया।

16. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के संबंध में कौन-सा कथन असत्य है?

(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

(a) यह एक विधि ग्रंथ है।
(b) यह पंद्रह अधिकरणों में विभक्त है।
(c) इसमें पहला और सातवाँ अधिकरण प्राचीन हैं।
(d) इसमें प्राचीन भारतीय राजतंत्र तथा अर्थव्यवस्था के अध्ययन की सामग्री मिलती है।

उत्तर *(c)*

व्याख्या कौटिल्य के अर्थशास्त्र के संबंध में कथन (c) असत्य है, क्योंकि यह एक विधि ग्रंथ है, जो पंद्रह अधिकरणों या खंडों में विभक्त है, जिसका दूसरा और तीसरा खंड प्राचीन है न कि पहला व सातवाँ अधिकरण। इसके प्राचीनतम अंश मौर्यकालीन समाज और आर्थिक व्यवस्था की जानकारी देते हैं। इस ग्रंथ के द्वारा प्राचीन भारतीय राजतंत्र तथा अर्थव्यवस्था के अध्ययन में सहयोग मिलता है।

17. संगम साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

1. ये प्राचीनतम तमिल ग्रंथ हैं।
2. इनका संकलन ईसा की आरंभिक चार सदियों में हुआ।
3. संगम साहित्य के पद्य 30,000 पंक्तियों में मिलते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3
(d) केवल 3

उत्तर *(c)*

व्याख्या संगम साहित्य के संबंध में दिए गए सभी कथन सत्य हैं। प्राचीनतम तमिल ग्रंथों को संगम साहित्य के नाम से जाना जाता है।

इन साहित्यों का सृजन तत्कालीन राजाओं द्वारा संरक्षित विद्या केंद्रों में एकत्र कवियों या भाटों (राजाओं का यशगान करने वाली एक जाति) द्वारा ईसा की आरंभिक चार सदियों में किया गया था, जबकि इसका अंतिम संकलन संभवत: छठी सदी में हुआ मालूम पड़ता है।

संगम साहित्य के पद्य 30,000 पंक्तियों में लिखे गए हैं, जो आठ एट्टत्तोकै (संकलनों) में विभक्त हैं। ये पद्य सौ-सौ के समूहों में संगृहीत हैं।

18. यूनानी लेखक जस्टिन द्वारा किसे 'सैण्ड्रोकोट्स' कहा गया था?

(Chap 3, Class-XI, Old NCERT), (UKPSC Pre 2016)

(a) चंद्रगुप्त मौर्य
(b) चंद्रगुप्त प्रथम
(c) चंद्रगुप्त द्वितीय
(d) समुद्रगुप्त

उत्तर *(a)*

व्याख्या यूनानी लेखक जस्टिन ने सिकंदर के समकालीन 'सैण्ड्रोकोट्स' नाम की चर्चा की है। जस्टिन के विवरण से यह पता चलता है कि 326 ई. पू. सिकंदर के आक्रमण के समय, 322 ई. पू. में चंद्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण हुआ था। अत: यूनानी विवरण में सैण्ड्रोकोट्स नामक वह व्यक्ति चंद्रगुप्त मौर्य ही है।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?

(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)

	पुस्तक	**लेखक**
(a)	ज्योग्राफी	टॉलमी
(b)	नेचुरल हिस्टोरिका	हेरोडोटस
(c)	सीयूकी	ह्वेनसांग
(d)	इंडिका	मेगस्थनीज

उत्तर *(b)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (b) सही सुमेलित नहीं है। नेचुरल हिस्टोरिका की रचना प्लिनी ने ईसा की पहली सदी में की थी न कि हेरोडोटस ने। यह लैटिन भाषा में लिखी गई है, जिसमें भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापार का वर्णन किया गया है।

ज्योग्राफी की रचना यूनानी लेखक टॉलमी ने 150 ई. के आस-पास की थी।

सीयूकी की रचना चीनी यात्री ह्वेनसांग ने की है। यह एक बौद्ध तीर्थयात्री था, जो हर्षवर्द्धन के काल में अध्ययन हेतु भारत आया था। उसने अपनी पुस्तक में हर्षकालीन भारत के बारे जानकारी दी है।

'इंडिका' मेगस्थनीज की रचना है, जो चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र की यात्रा पर आया था।

20. हाथीगुम्फा अभिलेख किस शासक के विषय में जानकारी का स्रोत है? *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT), (UPPSC (Pre) 2018)*

(a) खारवेल
(b) अशोक
(c) हर्षवर्द्धन
(d) कनिष्क

उत्तर *(a)*

व्याख्या हाथीगुम्फा अभिलेख से खारवेल के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। ईसा की पहली सदी में कलिंग के खारवेल ने इस अभिलेख में अपने जीवन की बहुत सी घटनाओं का वर्णन वर्षवार किया है।

खारवेल ने नंद वंश के संस्थापक महापद्मनंद तथा अशोक के कलिंग पर आक्रमण की चर्चा हाथीगुम्फा अभिलेख में की है। हाथीगुम्फा अभिलेख ओडिशा की उदयगिरि पहाड़ियों में स्थित है।

21. सुमेलित कीजिए *(Chap 3, Class-XI, Old NCERT)*

	सूची I (लेखक)		**सूची II** (रचनाएँ)
A.	बाणभट्ट	1.	रामचरित
B.	विल्हण	2.	मूषिक वंश
C.	अतुल	3.	हर्षचरित
D.	संध्याकर नंदी	4.	विक्रमांकदेवचरित

कूट

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	1	4
(c)	3	4	2	1
(d)	1	4	3	2

उत्तर *(c)*

व्याख्या सही सुमेलन A-3, B-4, C-2, D-1 है।

बाणभट्ट ने हर्षचरित की रचना ईसा की सातवीं सदी में की थी। यह एक गद्य काव्य है, जिसमें हर्षवर्द्धन का आरंभिक जीवन वृत्तांत है।

विल्हण के द्वारा लिखी गई विक्रमांकदेवचरित में कल्याणी के चालुक्य राजा विक्रमादित्य पंचम के पराक्रमों के संबंध में विस्तृत विवरण दिया गया है।

अतुल द्वारा ग्यारहवीं सदी में लिखित मूषिक वंश एकमात्र महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में मूषिक वंश का वृत्तांत है, जिसका शासन क्षेत्र उत्तरी केरल था।

संध्याकर नंदी द्वारा रामचरित ग्रंथ बारहवीं सदी में लिखा गया, जिसमें कैवर्त्त जाति के किसानों और पाल वंश के राजा रामपाल के बीच हुई लड़ाई तथा रामपाल के विजयी होने का पूरा वृत्तांत लिखा गया है।

इतिहास लेखन

22. आधुनिक इतिहास लेखन के अंतर्गत मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद किस नाम से किया गया था? *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

(a) ए कोड ऑफ जेंटू लॉज (b) द कोड टू लॉज
(c) ए कोड ऑफ जेन्टल कॉमन (d) कोड ऑफ कॉन्डक्ट

↗ *उत्तर (a)*

व्याख्या आधुनिक इतिहास लेखन के अंतर्गत 'मनुस्मृति' का अंग्रेजी अनुवाद 1776 ई. में 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज' के नाम से कराया गया। यह सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाने वाली स्मृतियों में शामिल है। मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद प्राचीन भारतीय कानूनों और रीति-रिवाजों को समझने के लिए करवाया गया था।

23. 1789 ई. में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' नाटक का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया था? *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

(a) जेम्स प्रिंसेप (b) विलियम जोंस
(c) हेनरी विलियम डेरिजीयो (d) मैक्स मूलर

↗ *उत्तर (b)*

व्याख्या ईस्ट इंडिया कंपनी के सिविल सेवक सर विलियम जोंस ने 1789 ई. में कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुंतलम' नामक नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ब्रिटिशों द्वारा प्राचीन कानूनों और रीति-रिवाजों को समझने के प्रयास की दिशा में व्यापक कार्य आरंभ हुए, जो लगातार अठारहवीं सदी तक चलते रहे। इसी कड़ी में 1784 ई. में कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल नामक शोध संस्था की स्थापना की गई।

24. भारतीय इतिहास के अंग्रेजी लेखकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

1. सर विलियम जोंस ने भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद किया था।
2. विल्किन्स ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी।
3. भारत का पहला सुव्यवस्थित इतिहास विंसेंट ऑर्थर स्मिथ ने तैयार किया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 3 (b) 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) 1 और 3

↗ *उत्तर (a)*

व्याख्या भारतीय इतिहास के अंग्रेजी लेखकों के संदर्भ में कथन (3) सत्य है। विंसेंट ऑर्थर स्मिथ ने भारत में व्याप्त सभी कुरीतियों तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के गहन अध्ययन को अपनी पुस्तक 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में प्रकाशित किया है। इसी आधार पर उन्होंने 1904 ई. में प्राचीन भारत का पहला सुव्यवस्थित इतिहास भी तैयार किया। इस पुस्तक में उन्होंने राजनीतिक इतिहास को प्रधानता दी है।

कथन (1) और (2) असत्य हैं, क्योंकि सर विलियम जोंस ने अभिज्ञानशाकुंतलम का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा विल्किन्स ने 1785 ई. में भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया था और 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना की थी।

25. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है? *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

	पुस्तक	लेखक
(a)	इंडो एरियन्स	राजेंद्र लाल मित्र
(b)	हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र	पांडुरंग वामन काणे
(c)	ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया	आर. सी. मजूमदार
(d)	ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया	नीलकंठ शास्त्री

↗ *उत्तर (c)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (c) सही सुमेलित नहीं है, क्योंकि प्राचीन भारतीय इतिहास के अधिकांश लेखकों ने दक्षिण भारत के इतिहास पर विशेष ध्यान नहीं दिया। हालाँकि दक्षिण भारतीय इतिहासविद् के. ए. नीलकंठ शास्त्री ने भी अपनी पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया' में इसी मार्ग का अनुसरण किया, लेकिन उन्होंने 'ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया' नामक पुस्तक में अपनी इस गलती को सुधारते हुए दक्षिण भारतीय इतिहास पर समुचित ध्यान दिया था। आर. सी. मजूमदार की रचना 'हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ इंडियन पीपुल' है।

26. अराजनैतिक इतिहास लेखन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

1. ए. एल. बॉशम ने 'वंडर दैट वाज इंडिया' नामक पुस्तक लिखी।
2. बॉशम के अनुसार अतीत का अध्ययन जिज्ञासा और आनंद के लिए होना चाहिए।
3. यह पुस्तक वर्ष 1941 में प्रकाशित हुई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) 2 और 3

↗ *उत्तर (a)*

व्याख्या अराजनैतिक इतिहास लेखन के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। ब्रिटिश इतिहासकार संस्कृतविद् ए. एल. बॉशम ने अपनी पुस्तक 'वंडर दैट वाज इंडिया' में प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विभिन्न पक्षों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है और उन दोषों को नहीं दोहराया है, जिससे पूर्व लेखक वी. ए. स्मिथ ग्रसित थे।

ए. एल. बॉशम के कुछ लेखों से यह पता चलता है कि वह नास्तिक संप्रदायों के भौतिकवादी दर्शन में रुचि रखते थे। हालाँकि उन्होंने अपने बाद के कुछ लेखों के माध्यम से यह विचार रखा कि अतीत का अध्ययन जिज्ञासा और आनंद के लिए होना चाहिए।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि ए. एल. बॉशम की पुस्तक 'वंडर दैट वाज इंडिया' वर्ष 1951 में प्रकाशित हुई थी न कि वर्ष 1941 में।

27. निम्नलिखित में से किस इतिहासकार ने महाभारत काल से लेकर गुप्त साम्राज्य के अंत तक भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण किया था? *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

(a) राम कृष्ण गोपाल भंडारकर (b) हेमचंद्र राय चौधरी
(c) वी. ए. स्मिथ (d) डी. डी. कौशांबी

↗ *उत्तर (b)*

व्याख्या हेमचंद्र राय चौधरी ने महाभारत काल से लेकर गुप्त साम्राज्य के अंत तक के भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण किया था। वह एक यूरोपीय इतिहास के अध्यापक थे, इसलिए उनकी पुस्तक 'प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास' में नए तरीकों तथा तुलनात्मक दृष्टिकोण का समावेश मिलता है।

28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-XI, Old NCERT)*

1. पश्चिमी इतिहासकारों ने धार्मिक कर्मकांड, जाति, बंधुत्व और रूढ़ि को भारतीय इतिहास की मूल शक्तियाँ माना।
2. पश्चिमी इतिहासकारों का मानना है कि भारतीय समाज न बदला है और न बदला जा सकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 (d) न तो 1 और न ही 2

↗ ***उत्तर*** *(c)*

व्याख्या दिए गए दोनों कथन सत्य हैं। पश्चिमी लेखकों ने भारत के संबंध में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया के स्थान पर राजनीतिक गतिविधियों को व्यापक महत्त्व देना प्रारंभ किया है। उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि सभी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ भारत में आयातित नहीं हैं। कालांतर में उन्होंने धार्मिक धारणाएँ, कर्मकांड, जाति (वर्ण), बंधुत्व और रूढ़ि को ही भारतीय इतिहास के मुख्य तत्त्वों में शामिल किया है।

पश्चिमी इतिहासकार भारत के पिछड़ेपन का कारण बदलाव के प्रति उनकी नकारात्मक चेतना को उद्धृत करते हैं।

विविध

29. प्राचीन भारतीय इतिहास के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 1, Class-XI, Old NCERT)*

(a) प्राक् आर्य, हिंद आर्य, यूनानी ने भारत को अपना घर बनाया।
(b) आर्य सांस्कृतिक उपादान हड़प्पा सभ्यता के अंग हैं।
(c) प्राक आर्य जातीय उपादान दक्षिण की द्रविड़ संस्कृति से आए हैं।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

↗ ***उत्तर*** *(b)*

व्याख्या प्राचीन भारतीय इतिहास के संबंध में कथन (b) सत्य नहीं है, क्योंकि प्राचीन भारतीय इतिहास के संबंध में आर्य सांस्कृतिक उपादान हड़प्पा संस्कृति का अंग नहीं है। यह उत्तर के वैदिक और संस्कृतमूलक संस्कृति के अंग हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति की विलक्षणता यह रही है कि इसमें उत्तर और दक्षिण के तथा पूर्व और पश्चिम के सांस्कृतिक उपादान समेकित हो गए हैं।

30. भरतों का देश अर्थात् भारतवर्ष में निवास करने वालों को क्या कह कर संबोधित किया गया? *(Chap 1, Class-XI, Old NCERT)*

(a) भरत वंशी (b) भरत संतति
(c) भारतवासी (d) सिंधुवासी

↗ ***उत्तर*** *(b)*

व्याख्या संपूर्ण देश भरत नामक एक प्राचीन वंश के अंतर्गत शामिल था, जिसके नाम पर इसे भारतवर्ष अर्थात भरतों का देश कहा गया और यहाँ के निवासियों के लिए 'भरत संतति' शब्द का प्रयोग किया गया। प्राचीन भारत के लोगों की यह विशेषता थी कि वे एकता के लिए लगातार प्रयत्नशील रहे, उन्होंने देश की अखंडता को बनाए रखा।

31. निम्नलिखित में से कौन-सी प्राचीन भारतीय इतिहास की विशेषता थी? *(Chap 1, Class-XI, Old NCERT)*

(a) वर्ण व्यवस्था (b) जाति व्यवस्था
(c) भाषात्मक और सांस्कृतिक एकता (d) ये सभी

↗ ***उत्तर*** *(d)*

व्याख्या प्राचीन भारतीय इतिहास की विशेषताओं में वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था तथा भाषात्मक और सांस्कृतिक एकता शामिल थी। जहाँ एक ओर उत्तर भारत में वर्ण-व्यवस्था या जाति व्यवस्था का जन्म हुआ तो वहीं दूसरी ओर देश में भाषात्मक और सांस्कृतिक एकता स्थापित करने के प्रयास भी निरंतर चलते रहे। ईसा-पूर्व तीसरी सदी में प्राकृत भाषा संपर्क-भाषा (लिंगुआ फ्रैंका) के रूप में प्रचलित था

32. भारतीय उपमहाद्वीप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

1. भारतीय उपमहाद्वीप उतना बड़ा है जितना रूस को छोड़कर पूरा यूरोप है।
2. भारतीय उपमहाद्वीप के अंतर्गत भारत, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और पाकिस्तान शामिल हैं।
3. भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश भाग शीत कटिबंध में स्थित हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या भारतीय उपमहाद्वीप के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं।

भारत के इतिहास को उसके भौगोलिक अध्ययन के बिना नहीं समझा जा सकता। भारतीय उपमहाद्वीप का कुल क्षेत्रफल 4,202,500 वर्ग किमी है, जो संपूर्ण यूरोपीय महादेश के बराबर है (रूस को छोड़कर)।

भारतीय उपमहाद्वीप में भारत सहित बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और पाकिस्तान शामिल हैं।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है न कि शीत कटिबंधीय क्षेत्र में।

33. प्राचीन भारत में पश्चिमोत्तर सीमा के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) सुलेमान पर्वत हिमालय के पश्चिम में स्थित है।
(b) सुलेमान पर्वत श्रृंखला बलूचिस्तान में किरथार से जुड़ी है।
(c) बोलन दर्रे से प्रागैतिहासिक काल से ही आवागमन होता था।
(d) ईरानी आक्रमण बोलन दर्रे से हुआ था।

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या प्राचीन भारत में पश्चिमोत्तर सीमा के संबंध में कथन (a) सत्य नहीं है, क्योंकि भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित सुलेमान पर्वत श्रृंखला हिमालय के दक्षिण में स्थित है न कि पश्चिम में।

34. प्राचीन भारतीय इतिहास में मध्य एशिया के लिए बौद्ध धर्म के प्रचार का केंद्र स्थल कौन-सा था? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) कश्मीर (b) नेपाल की घाटी
(c) गंगा के मैदानी क्षेत्र (d) हिंदूकुश पर्वत

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या प्राचीन भारतीय इतिहास में मध्य एशिया के लिए बौद्ध धर्म प्रचार का केंद्र स्थल कश्मीर था। कश्मीर घाटी चारों ओर से पर्वतीय क्षेत्रों से घिरी होने के कारण एक अलग जीवन पद्धति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा पाई।

यहाँ पर लोगों के द्वारा सर्दियों और गर्मियों में मैदानी और पहाड़ी भागों में निरंतर आवागमन के पश्चात् एक नए तरह के आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण का विकास हुआ।

35. प्राचीन भारत में निम्नलिखित में से कौन-सा बंदरगाह कोरोमंडल तट पर अवस्थित था? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) अरिकमेडू (b) मुजरिस
(c) सोपारा (d) ताम्रलिप्ति

उत्तर *(a)*

व्याख्या प्राचीन भारत में अरिकमेडू, कोरोमंडल तट पर अवस्थित बंदरगाह था। कोरोमंडल तट एक चौड़ा तटीय मैदान है, जो पूर्वी तमिलनाडु में स्थित है। अरिकमेडू के अतिरिक्त कोरोमंडल तट पर **महाबलिपुरम** तथा **कावेरीपट्टनम्** बंदरगाह भी अवस्थित थे। ये मुख्यत: व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित थे, क्योंकि इन बंदरगाहों के द्वारा अन्य राज्यों से आवागमन आसान था।

36. प्राचीन भारत में धातुओं की प्राप्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

1. सोने का सबसे पुराना अवशेष 1800 ई. पू. में कर्नाटक से प्राप्त हुआ।
2. प्राचीन काल में आंध्र प्रदेश सीसे के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
3. मेसोपोटामिया से टिन का आयात होता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 3 (b) 2 और 3
(c) 1 और 2 (d) केवल 3

उत्तर *(c)*

व्याख्या प्राचीन भारत में धातुओं की प्राप्ति के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। प्राचीन भारत में सोना कोलार (कर्नाटक) की खानों से प्राप्त किया जाता था। सोने का सबसे प्राचीन अवशेष 1800 ई. पू. के आस-पास कर्नाटक में एक नवपाषाण युगीन स्थल से मिला है। सोने का नियमित प्रचलन ईसा की पाँचवीं सदी में हुआ था। कोलार कर्नाटक के गंगवंशियों की प्राचीनतम राजधानी थी।

प्राचीन काल में आंध्र प्रदेश सीसा के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था, इसी कारण आंध्र प्रदेश पर शासन करने वाले सातवाहन वंश के राजाओं ने बड़ी संख्या में सीसे के सिक्के जारी किए थे।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि टिन का आयात मेसोपोटामिया से नहीं, बल्कि अफगानिस्तान से किया जाता था।

37. वैदिकोत्तर संस्कृति, जो मुख्यतः लोहे के प्रयोग पर आश्रित थी, का विकास मुख्यतः किस क्षेत्र में हुआ? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) गंगा-यमुना दोआब में (b) नेपाल घाटी में
(c) मध्य गंगा घाटी में (d) पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में

उत्तर *(c)*

व्याख्या वैदिकोत्तर संस्कृति, जो मुख्यत: लोहे के प्रयोग पर आश्रित थी, का विकास मुख्यत: मध्य गंगा की घाटी में हुआ था। वैदिक संस्कृति का उद्भव पश्चिमोत्तर प्रदेश और पंजाब में हुआ। मगध राजवंश के उदय का प्रमुख कारण लोहे का नियमित प्रयोग था। बड़े पैमाने पर अवंति (उज्जैन की राजधानी) राज्य ने लोहे का प्रयोग कर स्वयं को स्थापित किया।

38. आरंभिक मध्य युग के प्रमाण निम्नलिखित में से किन क्षेत्रों में मिलते हैं? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) असम (b) ब्रह्मपुत्र घाटी
(c) 'a' और 'b' दोनों (d) बोलन घाटी

उत्तर *(c)*

व्याख्या आरंभिक मध्य युग के प्रमाण असम और ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के क्षेत्रों में से मिलते हैं। वैदिकोत्तर संस्कृति के बाद लोहे के प्रयोग ने विभिन्न नदी घाटी में राजवंशों और राज्यों के उद्भव को बढ़ावा दिया, इसी क्रम में अंतिम चरण का महत्त्व ब्रह्मपुत्र घाटी को प्राप्त हुआ। प्रमुख शक्तियाँ इन नदी घाटियों में प्रभुत्व हेतु निरंतर संघर्षरत रहीं।

39. प्राचीन कालीन कलिंग देश के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) यह वर्तमान के ओडिशा का समुद्रवर्ती प्रदेश था
(b) उसकी उत्तरी सीमा महानदी थी
(c) उसकी दक्षिणी सीमा नर्मदा नदी थी
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर *(c)*

व्याख्या प्राचीन कालीन कलिंग देश के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है, क्योंकि प्राचीन कालीन कलिग देश की दक्षिणी सीमा गोदावरी नदी तक थी न कि नर्मदा नदी तक। भारतीय प्रायद्वीपीय क्षेत्र के पूर्वी भाग में आधुनिक ओडिशा का समुद्र तटवर्ती क्षेत्र कलिंग देश कहलाता था, जिसकी उत्तरी सीमा महानदी तक थी।

40. ऐतिहासिक स्रोत के रूप में उपलब्ध विश्व प्रसिद्ध कंधार के अभिलेख की लिपि क्या है? *(Chap 1, Class-VI, Old NCERT)*

(a) अरमाइक और ब्राह्मी (b) यूनानी और ब्राह्मी
(c) देवनागरी और तमिल (d) यूनानी और अरमाइक

उत्तर *(d)*

व्याख्या ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में उपलब्ध विश्व प्रसिद्ध कंधार के अभिलेख की लिपि यूनानी और अरमाइक हैं। लगभग 2250 वर्ष पुराना यह स्रोत (अभिलेख) वर्तमान अफगानिस्तान से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख मौर्य शासक अशोक के आदेश पर उत्कीर्ण करवाया गया था।

41. प्राचीन पांडुलिपियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है? *(Chap 1, Class-VI, New NCERT)*

(a) प्राचीनकाल में पांडुलिपियों के लिए भूर्ज की छाल का प्रयोग होता था।
(b) ताड़ के पत्तों को काटकर लेखन कार्य किया जाता था।
(c) हाथ से लिखी गई पुस्तकें पांडुलिपि की श्रेणी में आती थीं।
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर *(d)*

व्याख्या प्राचीन पांडुलिपियों के संबंध में दिए गए सभी कथन सत्य हैं। प्राचीन पांडुलिपि के अध्ययन को निम्न प्रकार द्वारा समझा जा सकता है

जिन पुस्तकों को हाथ से लिखा गया है, वो पांडुलिपि कही जाती हैं। पांडुलिपि के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त होने वाला शब्द 'मैन्यूस्क्रिप्ट' है। यह लैटिन शब्द 'मेनू' जिसका अर्थ 'हाथ' होता है, से निकला है।

पांडुलिपियाँ प्राय: ताड़पत्रों अथवा हिमालय क्षेत्र में उगने वाले भूर्ज नामक पेड़ की छाल से विशेष प्रकार से तैयार भोजपत्र पर लिखी जाती थीं। प्राय: ये पांडुलिपियाँ मंदिरों और विहारों में प्राप्त होती हैं।

इन पांडुलिपियों में आर्थिक मान्यताओं व व्यवहारों, राजाओं के जीवन, औषधियों तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयों की चर्चा मिलती हैं।

42. प्राचीन कालीन भाषा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

1. उत्तर भारत की अधिकांश भाषाएँ द्रविड़ भाषा से निकली हैं।
2. द्रविड़ भाषा बोलने वाले लोग विंध्य के दक्षिण में रहते थे।
3. भारतीय आर्य भाषा बोलने वाले लोग विंध्य के उत्तर में रहते थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

➚ *उत्तर (b)*

व्याख्या प्राचीन कालीन भाषा के संबंध में कथन (2) और (3) सत्य हैं। विंध्य पर्वत शृंखला भारत के पूर्व और पश्चिम को मध्य भाग से विभक्त करती है और इस प्रकार यह उत्तर भारत और दक्षिण भारत की विभाजक रेखा कहलाती है। द्रविड़ भाषा बोलने वाले लोग विंध्य पर्वत के दक्षिणी भाग में रहते हैं। विंध्य के उत्तरी भाग में निवास करने वाले लोग भारतीय आर्य भाषा का प्रयोग करते हैं।

कथन (1) असत्य है, क्योंकि उत्तरी और पश्चिमी भारत की अधिकांश भाषाएँ एक ही मूल भाषा हिंद आर्य से निकली हैं न कि द्रविड़ भाषा से।

43. प्राचीन काल में मिले किस पात्र में शराब या तेल जैसे तरल पदार्थ को रखा जाता था? *(Chap 8, Class-VI, New NCERT)*

(a) एंफोरा (b) एरेटाइन
(c) पोडुका (d) बेरिगाजा

➚ *उत्तर (a)*

व्याख्या प्राचीन काल में एंफोरा नामक पात्र में शराब या तेल जैसे तरल पदार्थ को रखा जाता था। एंफोरा एक कंटेनर था, जिसकी तुलना प्राचीन यूनान में भंडारण के लिए प्रयुक्त बर्तन से की जाती है।

इसकी आकृति में मुख्यत: एक संकीर्ण गर्दन वाली आकार और दोनों ओर पकड़ने हेतु हैंडल लगा होता था।

44. राजस्थान के खेत्री नामक क्षेत्र से ताँबे के बहुत से सेल्ट (1000 ई. पू. से पहले के) पाए गए हैं। इनकी पहचान किससे की जाती है? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) आदिम कुल्हाडी (b) आदिम बाण
(c) आदिम गंडासा (d) आदिम हल

➚ *उत्तर (a)*

व्याख्या राजस्थान के खेत्री (खेतड़ी) क्षेत्रों से ताँबे के बहुत से सेल्ट, जिन्हें आदिम कुल्हाड़ी कहा जाता है, 1000 ई. पू. की अवधि से पहले पाए गए हैं। ये ताँबे के औजार राजस्थान के अतिरिक्त दक्षिणी बिहार और मध्य प्रदेश से भी पाए गए थे। चूँकि ताँबा उपयोग में लाई गई पहली धातु थी, इसलिए हिंदू इस धातु को पवित्र मानने लगे और ताम्र-पात्रों का धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयोग होने लगा।

45. प्राचीन कालीन धातुओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

1. बर्मा तथा मलय प्रायद्वीपों के साथ भारत टिन का व्यापार करता था।
2. बिहार में मिली पाल-कालीन कांस्य प्रतिमाओं के लिए टिन जमशेदपुर तथा धनबाद से प्राप्त होता था।
3. हजारीबाग में टिन के अयस्क को गलाने का कार्य होता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

➚ *उत्तर (b)*

व्याख्या प्राचीन कालीन धातुओं के संबंध में कथन (1) और (3) सत्य हैं। ईसवी सन् की आरंभिक सदी से ही भारत का बर्मा और मलय प्रायद्वीपों के साथ व्यापक संपर्क स्थापित होने लगा था और ये दोनों क्षेत्र टिन धातु के भंडार में अग्रणी थे। जिसके फलस्वरूप बड़े पैमाने पर दक्षिण भारत में बनने वाली देव प्रतिमाओं में काँसे का प्रयोग होने लगा। हजारीबाग प्राचीन काल में टिन के अयस्क को गलाने हेतु प्रसिद्ध केंद्र था।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि बिहार में मिली पाल-कालीन कांस्य प्रतिमाओं के लिए टिन संभवत: जमशेदपुर और धनबाद से नहीं, बल्कि हजारीबाग और राँची से प्राप्त होता था।

46. प्राचीन काल में कौन-सा प्रदेश बड़े पैमाने पर लोहे का उपयोग करके ई. पू. छठी-पाँचवीं सदियों में महत्त्वपूर्ण राज्य बन गया था? *(Chap 4, Class-XI, Old NCERT)*

(a) अवंति (b) कन्नौज
(c) गांधार (d) बडिज

➚ *उत्तर (a)*

व्याख्या प्राचीन काल में अवंति प्रदेश बड़े पैमाने पर लोहे का उपयोग करके ई. पू. छठी-पाँचवीं सदियों में महत्त्वपूर्ण राज्य बन गया था। लोहे के प्रयोग ने साम्राज्य स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कालांतर में यह महाजनपद में परिवर्तित हो गया। इसकी दो राजधानियाँ थीं। उत्तरी अवंति की राजधानी उज्जयिनी तथा दक्षिणी अवंति की राजधानी महिष्मती थी।

02

प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

New NCERT Class VI आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक, Old NCERT Class VI आदि मानव
Old NCERT Class IX प्रागैतिहासिक काल में जीवन, Old NCERT Class XI प्रस्तर युग : आदि मानव,
ताम्र पाषाण कृषक संस्कृति, आर्यों का आगमन और ऋग्वैदिक युग

पाषाणकालीन संस्कृतियाँ

1. आदि मानव के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले पशुओं की हड्डियों से बने औजारों का प्रमाण कहाँ से मिलता है? *(Chap 1, Class-VI, Old NCERT)*

(a) कश्मीर घाटी
(b) बोलन घाटी
(c) नेपाल की तराई
(d) ऊपरी गंगा के मैदान

उत्तर *(a)*

व्याख्या कश्मीर की घाटी में जानवरों (पशुओं) की हड्डियों से बने औजार और हथियार के प्रमाण मिले हैं। इस काल में आदिमानव ज्यादातर चकमक पत्थरों से बने औजारों का प्रयोग बहुतायत मात्रा में करते थे। पत्थर के बड़े टुकड़ों से हथौड़े, कुल्हाड़ियाँ और बसूले बनाए जाते थे। इन औजारों का प्रयोग आदिमानव पेड़ों की टहनियाँ काटने, जानवरों को मारने, जमीन खोदने आदि में करता था। चकमक पत्थर के आविष्कार ने आग उत्पन्न करने के अतिरिक्त अन्य कार्यों में आदि मानव को सुविधाएँ दीं।

2. आरंभिक पुरापाषाण काल के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) इस काल में मानव खाद्य संग्राहक बना रहा
(b) इस काल में विदारणी एक प्रमुख औजार था
(c) इस युग के निवास स्थल सोहन घाटी से मिले हैं
(d) इस युग में खंडक का प्रयोग शिकार के लिए किया जाता था

उत्तर *(a)*

व्याख्या आरंभिक पुरापाषाण काल के संबंध में कथन (a) सत्य नहीं है, क्योंकि आरंभिक पुरापाषाण काल के मानव खाद्य संग्राहक नहीं थे, इस युग का मानवअपना खाद्य कठिनाई से प्राप्त करता था और अधिकांशत: शिकार पर ही निर्भर था।

कुल्हाड़ी या हस्त-कुठार (हैंड-एक्स), विदारणी (क्लीवर) तथा खंडक (चॉपर) आदि हथियारों तथा औजारों का उपयोग होता था। इस युग के निवास स्थल सोहन घाटी से मिले हैं, जो वर्तमान में पाकिस्तान प्रांत में स्थित हैं, लेकिन अनेक स्थल कश्मीर और थार मरुस्थलीय क्षेत्रों में भी मिले हैं।

3. भारतीय पुरापाषाण युग को तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है। निम्नलिखित में से कौन उनमें शामिल नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) निम्न पुरापाषाण युग
(b) महापाषाण युग
(c) मध्य-पुरापाषाण युग
(d) उत्तर-पुरापाषाण युग

उत्तर *(b)*

व्याख्या भारतीय पुरापाषाण युग की तीन अवस्थाओं में महापाषाण युग शामिल नहीं है। भारतीय पुरापाषाण युग को मानव द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले पत्थर के औजारों और जलवायु परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है- आरंभिक या निम्न-पुरापाषाण युग, मध्य-पुरापाषाण युग, उत्तर पुरापाषाण युग।

4. पुरापाषाण युग के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) अधिकांश आरंभिक पुरापाषाण युग हिम-युग से गुजरा है।
(b) आरंभिक पुरापाषाण के स्थल पाकिस्तान में पाए जाते हैं।
(c) आरंभिक पुरापाषाण के औजार बिहार के चिरांद में पाए गए हैं।
(d) हस्तकुठार द्वितीय हिमालयीय अंतर्हिमावर्तन के समय के जमाव में मिले हैं।

उत्तर *(c)*

व्याख्या पुरापाषाण युग के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है, क्योंकि आरंभिक पुरापाषाण युग के औजार चिरांद से नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश की बेलन घाटी (मिर्जापुर) से प्राप्त हुए हैं। चिरांद (बिहार) से नवपाषाण काल के पत्थर के औजार प्राप्त हुए हैं।

5. मध्य-पुरापाषाण युग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

1. इस युग में उद्योग मुख्यत: पत्थर की पपड़ी से बनी वस्तुओं का था।
2. फलक, बेधनी, छेदनी तथा खुरचनी पपड़ी से बने औजार हैं।
3. इस युग में सूक्ष्म पाषाण (माइक्रोलिथ्स) औजारों का प्रयोग होता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) 2 और 3

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या मध्य-पुरापाषाण युग के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। मध्य पुरापाषाण युग में उद्योग मुख्यत: पत्थर की पपड़ी से बनी वस्तुओं का था। ये पपड़ियाँ संपूर्ण भारत में पाई गई हैं और इनमें क्षेत्रीय अंतर भी पाया गया है। इस युग के मुख्य औजारों में पपड़ियों से बने विविध प्रकार के फलक, बेधनी, छेदनी और खुरचनी आदि शामिल हैं।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि माइक्रोलिथ्स औजार मध्य पाषाण युग से संबंधित है न कि मध्य पुरापाषाण युग से।

6. मध्य-पुरापाषाण काल में उस उद्योग को क्या कहते थे, जिसमें पत्थर के गोलों से वस्तुओं का निर्माण किया जाता था? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) मिसोलिथिक उद्योग (b) बटिकाश्म उद्योग
(c) शैलाश्रय उद्योग (d) मेगालिथ उद्योग

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या मध्य-पुरापाषाण काल में पत्थर के गोलों से वस्तुओं के निर्माण की कला विकसित थी, जिसे सरल बटिकाश्म उद्योग के रूप में जाना जाता है। इस काल के स्थल उसी स्थान पर मिले हैं, जहाँ आरंभिक पुरापाषाण स्थल पाए गए हैं। इस युग की शिल्प सामग्री नर्मदा नदी के किनारे स्थित कई स्थानों पर तथा तुंगभद्रा नदी के दक्षिणावर्ती अनेक स्थानों पर पाई गई है।

7. आधुनिक प्रारूप में मानव (होमोसेपिएंस) का प्रादुर्भाव किस युग में हुआ था? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) उत्तर पुरापाषाणीय काल (b) मध्य-पुरापाषाणीय काल
(c) मध्य-पाषाण काल (d) नव-पाषाण काल

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या आधुनिक प्रारूप में मानव का प्रादुर्भाव उत्तर पुरापाषाणीय काल में हुआ। आधुनिक मानव को होमोसेपिएंस के नाम से जाना जाता है। इस युग में मानव के उपयोग हेतु गुफाओं का साक्ष्य भीमबेटका से मिला है। इस युग में फलक और तक्षणियों (ब्लेड्स और ब्यूरिन्स) के उपयोग के साक्ष्य आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्रों से मिले हैं।

8. मध्य-पाषाण युग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

1. यह पुरापाषाण और नव-पाषाण के बीच का संक्रमण काल है।
2. इस युग में लोग शिकार करके, मछली पकड़कर और खाद्य वस्तुएँ एकत्रित कर पेट भरते थे।
3. इस युग में लोग पशुपालक बन गए।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2 और 3 (d) केवल 2

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या मध्य-पाषाण युग के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। प्रस्तर युगीन संस्कृति में 9000 ई. पू. में एक मध्यवर्ती अवस्था का प्रादुर्भाव हुआ, जो मध्यपाषाण युग के रूप में जाना जाता है। यह पुरापाषाण युग और नवपाषाण युग के बीच का संक्रमण काल था। इस युग के लोग शिकार करके, मछली पकड़कर और खाद्य वस्तुओं को संग्रह कर अपना भोजन तैयार करते थे।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि मध्य पाषाण युग के लोग पशुपालक नहीं थे। पशुपालन नवपाषाण युग से प्रारंभ हुआ।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

	पुरा-स्थल	राज्य
(a)	वीरभान	पश्चिम बंगाल
(b)	तिन्नेवेल्ली	तमिलनाडु
(c)	डीडवाना	मध्य प्रदेश
(d)	मिर्जापुर	उत्तर प्रदेश

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (c) सही सुमेलित नहीं है, क्योंकि डीडवाना क्षेत्र राजस्थान में स्थित है न कि मध्य प्रदेश में। यह राजस्थान में स्थित एक मरुक्षेत्र है, जहाँ से आरंभिक पुरापाषाण काल के औजार प्राप्त हुए हैं।

10. मनुष्य द्वारा खोजी गई प्रथम धातु ताँबा थी। इसमें किसके मिश्रण से कांस्य का निर्माण होता था? *(Chap 1, Class-VI, Old NCERT)*

(a) टिन (b) लोहा
(c) लाजवर्थ मणि (d) सीसा

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या मनुष्य द्वारा खोजी गई प्रथम धातु ताँबा थी। ताँबा और टिन के मिश्रण से काँसा का निर्माण होता है, क्योंकि यह एक मिश्रधातु है। ताँबा भारत में राजस्थान के खेतड़ी से प्राप्त किया जाता था और टिन का आयात बर्मा और मलय प्रायद्वीपों से किया जाता था। दक्षिण भारत में देवी प्रतिमाओं के निर्माण में कांसा का प्रयोग किया जाता था।

11. पुरापाषाण और मध्यपाषाण की कलाकृतियों के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) इस काल में पर्चिंग पक्षी आरंभिक चित्रों में नहीं पाए जाते थे।
(b) पर्चिंग अनाज पर जीने वाला प्रमुख पक्षी था।
(c) भीमबेटका चित्रकला की आदिम प्रस्तुति को उद्घाटित करता है।
(d) भीमबेटका वर्तमान में उत्तर प्रदेश में स्थित है।

↗ **उत्तर** *(d)*

व्याख्या पुरापाषाण और मध्यपाषाण की कलाकृतियों के संबंध में कथन (d) सत्य नहीं है, क्योंकि पुरापाषाण और मध्यपाषाण की कलाकृतियाँ भीमबेटका के शैलाश्रय से प्राप्त हुई हैं। यह स्थल वर्तमान उत्तर प्रदेश में नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश में स्थित है। यह स्थल विंध्य पर्वत के दक्षिण में स्थित है। यहाँ पर 500 से भी अधिक चित्रित गुफाएँ पाई गई हैं। इन गुफाओं के चित्र पुरापाषाण काल से लेकर मध्यपाषाण काल तक के हैं जिनमें बहुत सारे पशु, पक्षी और मानव के चित्र भी हैं। अनाज पर आश्रित रहने वाली पर्चिंग पक्षी के चित्र इन गुफाओं में नहीं मिले हैं।

12. मध्य पाषाणिक प्रसंग में पशुपालन के प्रमाण जहाँ मिले हैं, यह स्थान है *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT), (UPPSC Pre 2008)*

(a) लंघनाज (b) बीरभानपुर
(c) आदमगढ़ (d) चोपनी मांडो

↗ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या मध्य पाषाणिक प्रसंग में पशुपालन का सबसे प्राचीन प्रमाण आदमगढ़ से प्राप्त हुआ है। मध्य प्रदेश में आदमगढ़ तथा राजस्थान के बागोर जिले में पशुपालन की उन्नत अवस्था मौजूद थी। यह अवस्था 9000 ई.पू. से 4000 ई.पू. के मध्य मौजूद थी। आदमगढ़ में यहाँ के निवासियों की जीविका का आधार पशुपालन प्रतीत होता है। पशुपालकों के निवास स्थल के साक्ष्य भी यहाँ प्राप्त हुए हैं।

13. नवपाषाण काल के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) इस युग के लोग पॉलिशदार पत्थर का प्रयोग करते थे।
(b) लोग काँस्य की कुल्हाड़ी का प्रयोग करते थे।
(c) इस काल में सर्वप्रथम कृषि उत्पादन शुरू हुआ।
(d) इस काल में ही मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए चाक का उपयोग शुरू हुआ।

↗ ***उत्तर*** *(b)*

व्याख्या नवपाषाण काल के संबंध में कथन (b) सत्य नहीं है, क्योंकि नवपाषाण काल में काँसे की कुल्हाड़ी का प्रयोग नहीं किया जाता था, बल्कि पॉलिशदार पत्थर के औजारों और हथियारों का प्रयोग होता था। नवपाषाण काल कई महत्त्वपूर्ण कारणों से केंद्र में रहा, जिसमें कृषि उत्पादन, मिट्टी के बर्तन बनाने हेतु चाक का उपयोग, पशुपालन का प्रारंभ तथा आग का प्रारंभ आदि प्रमुख थे।

14. नवपाषाण काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

1. गुफकराल से कृषि के साक्ष्य मिले हैं।
2. गुफकराल का अर्थ 'शिकारी की गुहा' होता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) केवल 3

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या नवपाषाण काल के संबंध में कथन (1) सत्य है। कश्मीर घाटी में नवपाषाणकालीन स्थान गुफकराल है, जहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों से परिचित थे। अत: यहाँ से कृषि के साक्ष्य मिले हैं।

कथन (2) असत्य है, क्योंकि गुफकराल का अर्थ 'कुम्हार की गुफा' होता है न कि शिकारी की गुहा।

15. सुमेलित कीजिए *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

	सूची I (पुरास्थल)		सूची II (अवस्थिति)
A.	मेहरगढ़	1.	बलूचिस्तान
B.	चेचर	2.	बिहार
C.	गारो पहाड़ियाँ	3.	कर्नाटक
D.	हल्लुर	4.	मेघालय

कूट

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	1	2	4	3
(c)	4	3	2	1
(d)	4	3	1	2

↗ ***उत्तर*** *(b)*

व्याख्या सही सुमेलन- A-1, B-2, C-4, D-3 है।

मेहरगढ़, एक नवपाषाणकालीन स्थल है, जहाँ से कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यह पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है।

चेचर, बिहार के वैशाली जिले में अवस्थित एक नवपाषाणिक पुरास्थल है।

गारो पहाड़ियाँ, पूर्वोत्तर राज्य मेघालय में स्थित हैं। यह मेघालय में गारो-खासी श्रृंखला का भाग है।

हल्लुर एक नवपाषाणकालीन स्थल है, जिसकी अवस्थिति कर्नाटक में है। दक्षिण भारत में नवपाषाण अवस्था 2000 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक जारी रही।

16. बिहार स्थित किस नवपाषाणिक स्थल से हड्डी के हथियार बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT)*

(a) वज्जि (b) कुंडग्राम
(c) चिरांद (d) चंपा

↗ ***उत्तर*** *(c)*

व्याख्या बिहार के सारण जिले में अवस्थित चिरांद नामक नवपाषाण कालीन स्थल से हड्डी के हथियार बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त हड्डियों के औजारों की तिथि 2000 ई. पू. के आस-पास की थी। संभवत: यहाँ से मिले औजार को पहले नवपाषाण काल की श्रेणी में रखा गया है।

17. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है? *(Chap 5, Class-XI, Old NCERT), (UPPSC Pre 2010)*

(a) बुर्जहोम (b) कोलडिहवा
(c) चोपानी मांडो (d) मांडो

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या बुर्जहोम की कब्रों में मालिकों के साथ पालतू कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है। उत्तर-पश्चिम में कश्मीर घाटी में नवपाषाण संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल 'बुर्जहोम' है, जिसका अर्थ है-'भुर्ज वृक्षों का स्थान'।

पालतू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ दफनाने की प्रथा भारत के अन्य किसी भाग में नवपाषाण युगीन लोगों में शायद नहीं थी।

18. यह बोलन दर्रे के पास एक हरा भरा समतल स्थान है, यहाँ के स्त्री-पुरुषों ने इस क्षेत्र में सबसे पहले जौ, गेहूँ उगाना तथा भेड़-बकरी पालना सीखा। कब्रों में मनुष्य के साथ बकरी को दफनाने से उनकी इस आस्था को बल मिलता है कि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है? यह विवरण इस नवपाषाणिक स्थल का सटीक विवरण है *(Chap 1, Class-VI, New NCERT)*

(a) मेहरगढ़ (b) बुर्जहोम
(c) गुफकराल (d) कोटदीजी

↗ ***उत्तर*** *(a)*

व्याख्या प्रश्न में वर्णित विवरण का संबंध मेहरगढ़ से है। मेहरगढ़ पाकिस्तान के बलूचिस्तान में ईरान की सीमा के पास बोलन दर्रे के निकट है, यह एक समतल मैदानी क्षेत्र है। नवपाषाण काल में कृषि एवं पशुपालन का पहला साक्ष्य इस स्थान से प्राप्त हुआ है। यहाँ मृतकों के साथ कब्र में बकरी को दफनाने का भी साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

19. दाओजली हेडिंग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-VI, New NCERT)*

1. यह ब्रह्मपुत्र की घाटी में स्थित था।
2. यहाँ से 'काष्ठाश्म' के औजार और बर्तन मिले हैं।
3. यहाँ से मूसल और खरल जैसे उपकरण प्राप्त हुए हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

उत्तर *(c)*

व्याख्या दाओजली हेडिंग के संबंध में सभी कथन सत्य हैं। दाओजली हेडिंग असम के कछार पर्वत के ऊपरी भाग में ब्रह्मपुत्र नदी घाटी में स्थित एक नवप्रस्तरकालीन स्थल है।

नवप्रस्तरकालीन मानव ने यहाँ उपलब्ध बलुआ पत्थर व शैल का उपयोग उपकरणों को बनाने में किया था। यहाँ से प्राप्त उपकरण अधिकांशत: इन्हीं दोनों पत्थरों से बनाए गए।

इस स्थल से प्राप्त मुख्य अवशेष पाषाण उपकरण हैं, जो क्वार्ट्जाइट, बलुआ पत्थर, शैल व प्रस्तरीकृत लकड़ी पर निर्मित हैं। इनमें मूसल और खरल तथा काष्ठाश्म के औजार व बर्तन शामिल हैं।

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 2, Class-VI, New NCERT)

1. नवपाषाण-काल में कुत्ते को सबसे पहले पालतू बनाया गया था।
2. महागढ़ा और पैच्चमपल्ली से कृषि कार्य के साक्ष्य मिले हैं।
3. नवपाषाण काल के लोग कपड़े बुनने लगे थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

उत्तर *(c)*

व्याख्या दिए गए सभी कथन सत्य हैं। पाषाणकालीन लोगों ने संभवत: अपने घरों के आस-पास चारा रखकर जंतुओं को पालतू बनाया। सबसे पहले इनके द्वारा कुत्ते को पालतू बनाने के बारे में साक्ष्य प्राप्त होते हैं। तत्पश्चात् भेड़ और बकरी को पालतू बनाए जाने की चर्चा सामने आती है। नवपाषाणकालीन स्थल से कृषक और पशुपालकों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र, आधुनिक कश्मीर, पूर्वी तथा दक्षिण भारत ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जहाँ से कृषकों और पशुपालकों के साक्ष्य मिले हैं। महागढ़ा (उत्तर-प्रदेश) और पैच्चमपल्ली (तमिलनाडु) ऐसे नवपाषाणकालीन स्थल थे, जहाँ से कृषकों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

नवपाषाण काल में कपास उगाए जाने के संबंध में पता चला है, जिससे यह प्रतीत होता है कि लोग कपड़ा बुनने का कार्य भी करते थे।

21. नवपाषाणिक मिश्रित कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 1, Class-IX, Old NCERT)*

1. खेती वाले मनुष्य अनिवार्य रूप से पशुपालन करते थे।
2. कृषि के साथ पशुपालन को मिश्रित कृषि की संज्ञा दी गई।
3. फसल काटने के पश्चात् तुरंत सारा अनाज खत्म कर दिया जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर *(a)*

व्याख्या नवपाषाणिक मिश्रित कृषि के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं।

नवपाषाण काल में पशुपालन और कृषि दोनों साथ की जाने लगी थी, तत्पश्चात् मिश्रित कृषि की शुरुआत हुई। संभवत: इस काल में पानी की निकटता वाले क्षेत्रों का पशु के बाहुल्य के कारण मनुष्य ने उनका अध्ययन किया और कृषि कार्य के पश्चात् फसलों की भूसी को उनके आहार के रूप में उपयोग करने लगे, जिससे दोनों कार्य साथ-साथ किए जाने लगे।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि नवपाषाण काल में फसल काटने के तुरंत बाद सारा अनाज समाप्त नहीं किया जाता था, बल्कि उसे अगली उपज तक चलाया जाता था और उसमें से कुछ बोने के लिए बीज के रूप में भी आवश्यकतानुसार अनाज को बचाकर रखा जाता था।

22. नवपाषाणकालीन लोगों के धार्मिक विश्वास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 1, Class-IX, Old NCERT)

1. मृत व्यक्तियों को हथियार, बर्तन तथा खाने-पीने की चीजों के साथ दफनाया जाता था।
2. मृत पूर्वजों के शव जमीन में दफना देने से उनकी आत्माएँ फसलों के बढ़ने में मदद देती हैं।
3. नवपाषाण काल के लोगों का कुल-चिह्नों में विश्वास था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 3 (b) 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) 1 और 3

उत्तर *(c)*

व्याख्या नवपाषाणकालीन लोगों के धार्मिक विश्वास के संबंध में सभी कथन सत्य हैं। मृत व्यक्तियों को दफनाने के तरीकों से नवपाषाणकालीन लोगों के धार्मिक विश्वासों के विषय में जानकारी मिलती है। मृत व्यक्तियों को हथियार, मिट्टी के बर्तन तथा खाने-पीने की वस्तुओं के साथ कब्रों में दफनाया जाता था। ऐसा विश्वास था कि मरने के बाद भी व्यक्तियों को इन वस्तुओं की जरूरत पड़ेगी।

नवपाषाण काल में कब्रों का महत्त्व पहले की अपेक्षा अधिक हो गया था, क्योंकि इस समय कृषि का प्रचलन शुरू हो गया था और लोग आखेटक से खाद्य संग्राहक की ओर प्रेरित होने लगे। संभवत: इन्हीं कारणों से उस काल के लोगों की यह धारणा बन गई थी कि जिन मृत पूर्वजों के शव जमीन के नीचे गढ़े हुए हैं, उनकी आत्माएँ फसलों के बढ़ने में सहायता देती हैं।

नवपाषाण काल में इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि इन लोगों का कुल चिह्नों में विश्वास था। यदि कोई जाति या साथ-साथ रहने वाले परिवारों का कोई समूह किसी पशु या पौधे की आकृति को अपनी जाति या समूह का चिह्न मान लेता था, तो उसे जाति या समूह का कुल चिह्न कहा जाता था।

23. निम्नलिखित में से कौन-सी घटना नवपाषाण काल से संबंधित है?

(Chap 1, Class-IX, Old NCERT)

(a) आंवा में मिट्टी के बर्तन बनाना
(b) चिकने पत्थर के औजार बनाना
(c) पहिए का आविष्कार
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर *(d)*

व्याख्या नवपाषाण काल को कृषि का आरंभ, मिश्रित कृषि का विकास, बस्तियों का विकास, चिकने पत्थर के औजार बनाना, आंवा में मिट्टी के बर्तन बनाना, पहिए का आविष्कार तथा कातने और बुनने की कला का प्रारंभ आदि प्रक्रियाओं के प्रारंभ हेतु जाना जाता है।

विश्वस्तरीय संदर्भ में नवपाषाण युग 9000 ई.पू. में आरंभ होता है, वहीं भारतीय उपमहाद्वीप में इसकी शुरुआत 7000 ई.पू. से मानी जाती है।

ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियाँ

24. ताम्रपाषाण युग के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

(a) इसे चाल्कोलिथिक कहा जाता है।
(b) यह पत्थर और ताँबे के उपयोग की अवस्था है।
(c) तकनीकी दृष्टि से ताम्रपाषाण अवस्था हड़प्पा की कांस्ययुगीन संस्कृति के बाद की है।
(d) यहाँ के लोग ग्रामीण समुदाय बना कर रहते थे।

उत्तर *(c)*

व्याख्या ताम्रपाषाण युग के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है, क्योंकि तकनीकी दृष्टि से ताम्रपाषाण अवस्था हड़प्पा की कांस्ययुगीन संस्कृति से पहले की है न कि बाद की। नवपाषाण युग के अंत होने के साथ ही धातुओं का प्रयोग प्रारंभ हो गया। धातुओं में सबसे पहले ताँबा का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

कई संस्कृतियों का जन्म पत्थर और ताँबे के उपकरणों का साथ-साथ प्रयोग करने के कारण हुआ। इन संस्कृतियों को ताम्रपाषाणिक (चाल्कोलिथिक) कहते हैं, जिसका अर्थ है— पत्थर और ताँबे के उपयोग की अवस्था। वे लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय बनाकर रहते थे और देश के ऐसे विशाल भागों में फैले थे, जहाँ पहाड़ी और नदियाँ विद्यमान थीं।

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

1. अहार और गिलुंद ताम्रपाषाणिक स्थल हैं।
2. मालवा मृद्‌भांड ताम्रपाषाणिक मृद्‌भांडों में उत्कृष्टतम माना जाता है।
3. पश्चिमी महाराष्ट्र में इनामगाँव एक वृहत्तर ताम्रपाषाणिक स्थल है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 3

उत्तर *(c)*

व्याख्या दिए गए सभी कथन सत्य हैं। अहार और गिलुंद से ताँबे की वस्तुएँ बहुतायत में मिली हैं, यह राजस्थान में स्थित है। अहार का प्राचीन नाम तांबवती अर्थात् तांबावाली जगह है। अहार संस्कृति का काल संभवत: 2100 और 1500 ई. पू. के बीच का है और गिलुंद इसी संस्कृति का स्थानीय केंद्र था, गिलुंद से ताँबे के टुकड़े प्राप्त हुए हैं।

पश्चिमी मध्य-प्रदेश में स्थित मालवा मृद्‌भांड ताम्रपाषाणिक मृद्‌भांडों में उत्कृष्टतम माना जाता है, जो उसकी विलक्षणता को दर्शाता है।

इनामगाँव पश्चिमी महाराष्ट्र में आरंभिक ताम्रपाषाणिक स्थल है, यह ताम्रपाषाण युग की सबसे बड़ी बस्ती है।

26. भारत में ताम्रपाषाण अवस्था की बस्तियाँ निम्नलिखित में से कहाँ नहीं मिलतीं?
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

(a) दक्षिण-पूर्वी राजस्थान
(b) मध्य-प्रदेश के पश्चिमी भाग
(c) पश्चिमी महाराष्ट्र
(d) ऊपरी गंगा यमुना दोआब

उत्तर *(d)*

व्याख्या भारत में ताम्रपाषाण अवस्था की बस्तियाँ ऊपरी गंगा यमुना दोआब क्षेत्र में नहीं मिलती हैं, बल्कि इस अवस्था की बस्तियाँ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग तथा दक्षिण-पूर्वी भारत और पश्चिमी महाराष्ट्र में पाई गई हैं। अहार, गिलुंद, मालवा, कायथा, एरण आदि इस प्रकार के उदाहरण हैं।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

	ताम्र पाषाणिक स्थल	अवस्थिति
(a)	इनामगाँव	महाराष्ट्र
(b)	पांडु राजा दिबि	ओडिशा
(c)	सेनुवार	बिहार
(d)	नरहन	उत्तर प्रदेश

उत्तर *(b)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (b) सही सुमेलित नहीं है। ताम्रपाषाणकालीन स्थल पांडु राजा दिबि ओडिशा में नहीं, बल्कि पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले में स्थित है। इसके अतिरिक्त पश्चिम बंगाल से प्राप्त अन्य ताम्रपाषाणिक स्थलों में बीरभूम जिले में स्थित महिषादल उल्लेखनीय है।

28. जोरवे संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

1. जोरवे एक नगरीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है।
2. यह कोंकण के तट प्रदेश में फैली थी।
3. इनामगाँव में नगरीकरण के प्रमाण मिलते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 3 (b) केवल 2
(c) 1 और 3 (d) 2 और 3

उत्तर *(a)*

व्याख्या जोरवे संस्कृति के संबंध में कथन (3) सत्य है। जोरवे संस्कृति की कई बस्तियों में से प्रमुख दैमाबाद और इनामगाँव नगरीकरण के स्तर तक पहुँच चुकी थी, जिसके प्रमाण इन ताम्रपाषाण कालीन स्थलों से प्राप्त होते हैं।

कथन (1) और (2) असत्य हैं, क्योंकि जोरवे संस्कृति मुख्यत: एक ग्रामीण संस्कृति थी, जिसका प्रादुर्भाव 1400-700 ई. पू. के आस-पास विदर्भ के कुछ भाग तथा कोंकण तट प्रदेशों के समूचे महाराष्ट्र में हुआ था।

29. निम्नलिखित में से किस स्थल को तांबवती (तांबावाली) कहा जाता है?
(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

(a) अहार (b) ताराडोर
(c) महिषादल (d) खैराडीह

उत्तर *(a)*

व्याख्या अहार को तांबवती (तांबावाली) के नाम से जाना जाता है, यह अहार का प्राचीन नाम था। अहार राजस्थान की बनास घाटी के शुष्क क्षेत्र में स्थित एक ताम्रपाषाणिक स्थल है, जहाँ से ताम्रपाषाणिक बस्तियों के प्रमाण भी मिले हैं।

30. ताम्रपाषाण युग की जीवन शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
(Chap 1, Class-VI, Old NCERT)

1. ताम्रपाषाण युग में लोग आभूषण और सजावट के शौकीन थे।
2. स्त्रियाँ सीपियों तथा हड्डियों के आभूषण पहनती थीं।
3. स्त्रियाँ बालों में सुंदर कंघियाँ लगाए रखती थीं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 3 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

उत्तर *(c)*

व्याख्या ताम्रपाषाण युग की जीवन शैली के संबंध में सभी कथन सत्य हैं। ताम्रपाषाण युग के लोगों को जंगली जंतुओं और कष्टदायक मौसम से आजादी मिली, जिसके कारण उनके पास पर्याप्त समय था दूसरे कार्यों के लिए और इन कार्यों में उन लोगों ने आभूषण बनाने की कला पर ध्यान दिया और इसी कारण वे लोग आभूषण और सजावट के शौकीन होते गए। स्त्रियाँ सीपियों तथा हड्डियों के आभूषण पहनने लगीं और बालों में सुंदर कंघियाँ लगाने लगीं।

31. ताम्रपाषाण संस्कृति के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) ताम्रपाषाण काल में कपास की खेती की जाती थी।
(b) इस काल के लोग काले व लाल मृद्भांड का प्रयोग नहीं करते थे।
(c) इस काल के लोग पक्की ईंटों से परिचित नहीं थे।
(d) महाराष्ट्र में सेमल की रूई के धागे प्राप्त हुए हैं।

↗ उत्तर *(b)*

व्याख्या ताम्रपाषाण संस्कृति के संबंध में कथन (b) सत्य नहीं है, क्योंकि ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के लोग काले-व-लाल मृद्भांड का प्रयोग करते थे। इनका प्रयोग दूसरी शताब्दी ई.पू. में बड़े पैमाने पर होता था। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान के कई स्थलों से चित्रित मृद्भांडों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

32. ताम्रपाषाणिक संस्कृति में निम्नलिखित में से किस पशु का साक्ष्य प्राप्त नहीं होता? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) गाय (b) सुअर
(c) घोड़ा (d) ऊँट

↗ उत्तर *(c)*

व्याख्या ताम्रपाषाण संस्कृति से घोड़े का साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। संभवत: इस संस्कृति के लोग घोड़े से परिचित नहीं थे। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा अन्यत्र कई ताम्रपाषाणिक स्थलों से पशुपालन और खेती करने का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। इस युग के लोग गाय, भेड़, बकरी, सूअर और भैंस से परिचित थे। वे हिरण का शिकार करते थे। कई स्थलों से ऊँट के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं।

33. ताम्र पाषाण युग की कब्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

1. महाराष्ट्र के लोग मृतक को कलश में रखकर कब्रिस्तान में दफनाते थे।
2. मृतकों के साथ ताँबे की वस्तुओं को भी दफनाया जाता था।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2
(d) न तो 1 और न ही 2

↗ उत्तर *(b)*

व्याख्या ताम्र पाषाण युग की कब्रों के संबंध में कथन (2) सत्य है। ताम्रपाषाण संस्कृति की कई बस्तियों से शव-संस्कारों तथा पूजा पद्धति के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है। इस काल में हड़प्पा संस्कृति की तरह अलग-अलग कब्रिस्तान नहीं होते थे। महाराष्ट्र के लोग कब्र में मिट्टी की हड्डियों के साथ-साथ ताँबे की कुछ वस्तुओं को रखते थे, जिसका प्रचलन इस काल में देखा जाता है।

कथन (1) असत्य है, क्योंकि महाराष्ट्र के लोग मृतक को कलश में रखकर कब्रिस्तान में नहीं, बल्कि अपने घर के फर्श के अंदर उत्तर-दक्षिण दिशा में दफनाते थे।

34. ताम्रपाषाण कालीन धार्मिक जीवन के संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) वे मातृ देवी की पूजा करते थे।
(b) यहाँ से कच्ची मिट्टी की नग्न मूर्तियों की पूजा के प्रमाण मिलते हैं।
(c) शेर धार्मिक पंथ का प्रतीक था।
(d) मालवा में वृषभ मूर्तिकाएँ प्राप्त हुई हैं।

↗ उत्तर *(c)*

व्याख्या ताम्रपाषाण कालीन धार्मिक जीवन के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है, क्योंकि ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति की मालवा और राजस्थान में मिली रूढ़ शैली में बनी मिट्टी की वृषभ-मूर्तिकाएँ यह संकेत करती हैं कि वृषभ (साँड) धार्मिक पंथ का प्रतीक था, न कि शेर।

35. ताम्रपाषाण काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों में कौन सत्य नहीं है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) ताम्रपाषाण अवस्था में अनाज भवन, मृद्भांड में क्षेत्रीय समानता थी।
(b) पूर्वी भारत चावल उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
(c) नवदाटोली में सबसे अधिक अनाज के भंडार पाए गए हैं।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

↗ उत्तर *(a)*

व्याख्या ताम्रपाषाण काल के संबंध में कथन (a) सत्य नहीं है, क्योंकि ताम्रपाषाण अवस्था में अनाज, भवन, मृद्भांड आदि में क्षेत्रीय समानता के स्थान पर क्षेत्रीय अंतर प्रतीत होता है। एक ओर, जहाँ पूर्वी भारत में चावल की खेती बहुतायत में की जाती थी, तो वहीं दूसरी ओर पश्चिमी भारत में जौ और गेहूँ बहुतायत में उगाए जाते थे।

गेहूँ, चावल, बाजरा, उड़द, मसूर, मूँग और मटर आदि अनाज महाराष्ट्र में नर्मदा नदी पर स्थित नवदाटोली स्थल से प्राप्त हुए हैं अर्थात् यहाँ से सबसे अधिक अनाज के भंडार पाए गए हैं।

36. सुमेलित कीजिए *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

	सूची I (ताम्रपाषाणिक स्थल)	सूचीI (अवस्थिति)
A.	गणेश्वर	1. बिहार
B.	चंदोली	2. महाराष्ट्र
C.	ताराडीह	3. राजस्थान
D.	मालवा	4. मध्य प्रदेश

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	2	1	4	(b)	3	2	4	1
(c)	4	1	3	2	(d)	4	1	2	3

↗ उत्तर *(a)*

व्याख्या सही सुमेलन- A-3, B-2, C-1, D-4 है।

गणेश्वर, राजस्थान में स्थित है। यह राजस्थान में खेतड़ी ताम्रपट्टी (ताँबे की खान) के सीकर-झुंझनूं क्षेत्र के ताँबे की समृद्ध खानों के निकट स्थित है। इस क्षेत्र से खुदाई में तीर की नोंक, बरछे के फल, बंसियाँ, सेल्ट, कंगन, छेनी आदि मिले हैं। इनमें से कुछ तो सिंधु घाटी में मिली आकृतियों से मिलते हैं।

चंदोली, पश्चिमी महाराष्ट्र में स्थित है। यहाँ मिले अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ पर कुछ बच्चों के गले में ताँबे के मनकों का हार पहना कर उन्हें दफनाया जाता था।

ताराडीह, बिहार में स्थित ताम्रपाषाणिक स्थल है।

मालवा, मध्य प्रदेश में स्थित क्षेत्र है, जहाँ ताम्रपाषाणिक मृद्‌भांड मिले हैं।

37. किस ताम्रपाषाणिक स्थल से एक ऐसी पिंडिका मिली है, जो सिंधु-टाइप से मिलती-जुलती है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) अलवर (b) मेहरगढ़
(c) गणेश्वर (d) नवदाटोली

➚ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या राजस्थान में स्थित गणेश्वर ताम्रपाषाण कालीन स्थल से ऐसी पिंडिका मिली है, जो सिंधु टाइप से मिलती-जुलती है।

अनेक प्रकार की प्राक् हड़प्पीय ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ सिंध, बलूचिस्तान, राजस्थान आदि प्रदेशों में कृषक-समुदायों के प्रसार में प्रेरणा स्रोत बनी और उनसे हड़प्पा की नगर सभ्यता के उदय हेतु अनुकूल अवसर बना। इसी दृष्टि से राजस्थान का कालीबंगा और गणेश्वर स्थल प्रमुख रूप से सिंधु टाइप दिखाई पड़ते हैं।

38. ताम्रपाषाण तथा हड़प्पा सभ्यता की तुलना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

1. राजस्थान का कालीबंगा प्राक्-हड़प्पाई स्थल के साथ-साथ ताम्रपाषाणिक स्थल भी है।
2. हरियाणा का बनावली एक ताम्रपाषाणिक स्थल है।
3. कोटदीजी विशुद्ध रूप से हड़प्पाई स्थल है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 2

➚ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या ताम्रपाषाण तथा हड़प्पा सभ्यता की तुलना के संबंध में कथन (1) और (2) सत्य हैं। कालक्रम के अनुसार भारत में ताम्रपाषाण बस्तियों की कई श्रृंखलाएँ प्रतीत होती हैं, जिनमें से कुछ प्राक् तथा हड़प्पाई हैं। कुछ हड़प्पा संस्कृति के समकालीन हैं तथा कुछ हड़प्पोत्तर हैं।

हड़प्पाई क्षेत्रों के कुछ स्थलों के प्राक् हड़प्पाई स्तरों को आरंभिक हड़प्पा संस्कृति भी कहते हैं, ताकि इसे परिपक्व नगरीय सिंधु सभ्यता से पृथक् किया जा सके। इस तरह की विशेषता राजस्थान का कालीबंगा और हरियाणा का बनावली स्थल रखता है, जो एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल भी हैं।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित कोटदीजी एक प्राक्-हड़प्पाई स्थल भी है अर्थात् यह एक ताम्रपाषाणिक स्थल भी है। यह विशुद्ध रूप से हड़प्पाई स्थल नहीं है।

39. कायथा संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) यह लगभग 2000-1800 ई. पू. तक विकसित रही।
(b) यह हड़प्पा संस्कृति की कनिष्ठ समकालीन है।
(c) इसके मृद्‌भांडों में प्राक्-हड़प्पाई लक्षण नहीं दिखते हैं।
(d) इस पर हड़प्पाई प्रभाव दिखाई देते हैं।

➚ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या कायथा संस्कृति के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है। यह संस्कृति, प्राक्-हड़प्पाई और हड़प्पोत्तर ताम्रपाषाण संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति की समकालीन ताम्रपाषाण संस्कृति है, जो उत्तरी, पश्चिमी और मध्य भारत में पाई जाती है। इस संस्कृति के मृद्‌भांडों में कुछ प्राक्-हड़प्पाई लक्षण दिखाई देते हैं। साथ ही इस पर हड़प्पाई प्रभाव दिखाई पड़ता है। यह संस्कृति लगभग 2000-1800 ई. पू. में विकसित हुई थी।

40. निम्नलिखित में से कौन-सी संस्कृति हड़प्पा संस्कृति से पृथक् मानी जाती है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) मालवा संस्कृति (b) जोरवे संस्कृति
(c) गैरिक मृद्‌भांड संस्कृति (d) ताम्रपाषाणिक संस्कृति

➚ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या मालवा संस्कृति हड़प्पा संस्कृति से पृथक् मानी जाती है, यह एक ताम्रपाषणिक बस्ती है। यहाँ से उत्कृष्ट ताम्र पाषाण के मृद्‌भांड मिलते हैं। मालवा संस्कृति का काल 1700-1200 ई.पू. माना जाता है, यह पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित है।

41. ताम्रपाषाण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

1. जलोढ़ मिट्टी वाले मैदानों में ताम्रपाषाणिक अवशेष मिले हैं।
2. ताम्रपाषाणिक लोगों ने अधिकतर नदी-तटों पर पहाड़ियों से कम दूरी पर गाँव बसाए।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 (d) न तो 1 और न ही 2

➚ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या ताम्रपाषाण के संबंध में कथन (2) सत्य है। सामान्यत: ताम्रपाषाणिक लोगों ने अधिकतर नदी-तटों पर पहाड़ियों से कम दूरी वाले स्थानों में गाँव बसाए थे। ये लोग सूक्ष्म पाषाणों और पत्थर के औजारों का प्रयोग करते थे। इनमें से अधिकतर लोग ताँबे को पिघलाने की कला से परिचित थे।

कथन (1) असत्य है, क्योंकि जलोढ़ मिट्टी वाले मैदानों और घने जंगल वाले क्षेत्रों को छोड़ कर प्राय: समूचे देश में ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। हालाँकि जलोढ़ मिट्टी वाले मैदानों में भी जलाशय के किनारे कई ताम्रपाषाणिक बस्तियाँ मिली हैं।

42. निम्नलिखित में से कौन ताम्रपाषाण संस्कृति की एक विशेषता है?

(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)

1. कांस्य का प्रयोग 2. प्रस्तर का प्रयोग
3. सूक्ष्म पाषाण औजारों का प्रयोग
4. ताँबे का प्रयोग

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 4
(c) 1 और 3 (d) 1 और 4

➚ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या ताम्रपाषाण संस्कृति की एक विशेषता पत्थर के औजार तथा हथियारों का उपयोग थी। इस युग में ताँबे का प्रयोग आरंभ हुआ। ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषताओं में कांसे तथा सूक्ष्म पाषाण औजारों का प्रयोग शामिल नहीं था।

43. ताम्रपाषाण काल के संबंध में निम्नलिखित में कौन-सा कथन सत्य नहीं है? *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

(a) ताम्रपाषाण स्थलों से न हल और न फावड़ा पाया गया है
(b) इस काल के लोग झूम खेती करते थे
(c) ताम्रपाषाण के लोग लोहे के प्रयोग से व्यापक खेती करते थे
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर *(c)*

व्याख्या ताम्रपाषाण काल के संबंध में कथन (c) सत्य नहीं है, क्योंकि खेती के लिए लौह के उपकरणों का प्रयोग आवश्यक होता है, लेकिन ताम्रपाषाण संस्कृति में लोहे का अस्तित्व नहीं था। ताम्रपाषाण के जो लोग पश्चिमी और मध्य भारत के काली कपास मिट्टी वाले क्षेत्रों में रहते थे, गहन या विस्तृत पैमाने पर कृषि कार्य नहीं कर सके।

ताम्रपाषाण स्थल से हल और फावड़ा का न पाया जाना इस बात को स्पष्ट स्वरूप प्रदान करता है कि ये लोग जमीन खोदने वाले डंडे (डीगिंग स्टिक) में पत्थर का छिद्रित चक्का दबाव के लिए लटका कर एक वैकल्पिक रूप में झूम कृषि कर पाते थे।

44. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

1. पश्चिमी महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में बच्चों के शवाधानों से ताम्रपाषाण संस्कृति की आम दुर्बलता प्रकट होती है।
2. खाद्य-उत्पादक अर्थव्यवस्था के होते हुए भी बच्चों के मरने की दर बहुत ऊँची थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर *(c)*

व्याख्या दिए गए दोनों कथन सत्य हैं। पश्चिमी महाराष्ट्र में पोषाहार में कमी, चिकित्सा के ज्ञान का अभाव या महामारी के प्रकोप को बड़ी संख्या में बच्चों के शवाधानों का जिम्मेदार माना जा सकता है।

खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था के बावजूद पश्चिमी महाराष्ट्र में बच्चों की मौतों की उच्च दर ने ताम्रपाषाणिक संस्कृति के आर्थिक और सामाजिक ढाँचे को आयुवर्धक नहीं बताया है।

45. ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 6, Class-XI, Old NCERT)*

1. चालीस से अधिक ताम्र निधियाँ भारत के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त हुई हैं।
2. ताम्र निधियों में से अधिकांश गंगा-यमुना दोआब में केंद्रित हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर *(d)*

व्याख्या ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों के संदर्भ में दिए गए दोनों कथनों में से कोई भी कथन सत्य नहीं है।

भारत के विभिन्न हिस्सों में चालीस से अधिक ताम्र निधियाँ (ताम्र उपकरणों के जखीरें) प्राप्त हुई हैं। ये पूर्व में बंगाल से गुजरात तथा हरियाणा तक फैली हैं। दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश में ताम्र निधियाँ प्राप्त होती हैं। भारत के उत्तरी मैदान विशेषकर गंगा-यमुना दोआब में आधी ताम्र निधियाँ स्थित हैं।

03

सिंधु घाटी सभ्यता

New NCERT Class VI नगर जीवन का प्रारंभ, आरंभिक नगर, New NCERT Class IX कांस्य युग की सभ्यताएँ, Old NCERT Class XI हड़प्पा संस्कृति : कांस्य युग सभ्यता, New NCERT Class XII ईंट, मनके तथा अस्थियाँ

उद्भव एवं विस्तार

1. किस सभ्यता का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ था?

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

(a) कांस्ययुगीन हड़प्पा सभ्यता
(b) लौहयुगीन आर्य सभ्यता
(c) ताम्रपाषाणिक महापाषाण सभ्यता
(d) मेसोपोटामिया की सभ्यता

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या कांस्ययुगीन हड़प्पा सभ्यता का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ था। हड़प्पा सभ्यता में सर्वप्रथम टिन तथा ताँबे को मिलाकर कांस्य का निर्माण किया गया था, इसलिए इसे कांस्ययुगीन सभ्यता कहा जाता है। ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में जितनी भी संस्कृतियों का विकास हुआ था, इनमें हड़प्पा संस्कृति कहीं अधिक विकसित थी।

ताम्रपाषणिक पृष्ठभूमि का अर्थ उस युग से है, जब पत्थर और ताँबे का प्रयोग बहुतायत में होने लगा। ताम्रपाषाण अवस्था हड़प्पा की कांस्युगीन संस्कृति से पहले की है।

2. दयाराम साहनी द्वारा वर्ष 1921 में खोजी गई सिंधु घाटी सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता पड़ा, क्योंकि

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

(a) सर्वप्रथम इसकी खोज पाकिस्तान स्थित हड़प्पा नामक स्थल पर हुई थी।
(b) सर्वप्रथम इसकी खोज पंजाब प्रांत में स्थित सिंधु नदी के तट पर हुई थी।
(c) इसका संबंध प्राक्-हड़प्पीय संस्कृति से था।
(d) इसका संबंध झुकर संस्कृति से था।

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या दयाराम साहनी द्वारा वर्ष 1921 में खोजी गई सिंधु घाटी सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता पड़ा। इस प्राचीन सभ्यता का विस्तार सिंधु घाटी से अलग क्षेत्रों में होने के कारण एक विशिष्ट पहचान के लिए इस सभ्यता का नामकरण हड़प्पा सभ्यता किया गया।

3. सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तार से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

1. उत्तर में इसका विस्तार जम्मू-कश्मीर के मांडा तक था।
2. दक्षिण में इसका विस्तार नर्मदा के मुहाने तक था।
3. पश्चिम में इसका विस्तार बलूचिस्तान के मकरान तक था।
4. पूर्व में इसका विस्तार गंगा-घाटी तक था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1, 2 और 4
(b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4
(d) केवल 4

↗ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तार के संबंध में कथन (1), (2) और (3) सत्य हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू एवं कश्मीर) से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्र तट से लेकर उत्तर-पूर्व में मेरठ तक था। यह संपूर्ण क्षेत्र त्रिभुज के आकार का है तथा इसका पूरा क्षेत्रफल लगभग 1299600 वर्ग किलोमीटर है।

कथन (4) असत्य है, क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता का पूर्व में विस्तार गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर (मेरठ) तक था।

4. हड़प्पा सभ्यता की तीन प्रमुख अवस्थाएँ किन स्थानों से प्राप्त हुई हैं? *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

1. धौलावीरा
2. राखीगढ़ी
3. रंगपुर
4. रोजदी

कूट

(a) 1 और 2
(b) 1 और 4
(c) 3 और 4
(d) केवल 1

↗ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता के धौलावीरा तथा राखीगढ़ी नामक स्थल से इस सभ्यता के तीनों (प्राक्, हड़प्पा, उत्तर) अवस्थाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। धौलावीरा गुजरात के कच्छ क्षेत्र में अवस्थित है। राखीगढ़ी, हरियाणा में घग्गर नदी के किनारे स्थित है। राखीगढ़ी भारत में सबसे बड़ा हड़प्पाई स्थल है। उत्तर हड़प्पा स्थल रंगपुर तथा रोजदी गुजरात के कठियावाड़ क्षेत्र में स्थित हैं।

5. हड़प्पा स्थल गणेश्वर, जो राजस्थान में स्थित ताँबा आपूर्ति केंद्र था, का उत्खनन किसके निर्देशन में किया गया था?

(Chap 3, Class-VI, New NCERT)

(a) एच. डी. सांकलिया (b) ए. एन. घोष
(c) बी.एन. मिश्रा (d) आर. सी. अग्रवाल

↗ उत्तर *(d)*

व्याख्या गणेश्वर सभ्यता का उत्खनन आर.सी. अग्रवाल द्वारा वर्ष 1977 में करवाया गया था। गणेश्वर से उत्खनन में ताम्र युगीन उपकरण भी प्राप्त हुए। यह कांतली नदी के किनारे स्थित है। इसे हड़प्पाई स्थलों को ताँबा आपूर्ति केंद्र के रूप में जाना जाता था। यह सभ्यता राजस्थान में विकसित हुई थी, इसको 'पुरातत्व का पुष्कर' भी कहा जाता है। यहाँ से ताँबे का बाण एवं मछली पकड़ने का काँटा प्राप्त हुआ है। साथ ही यहाँ से काले एवं नीले रंग से अलंकृत मृद्पात्र मिले हैं

नगर योजना

6. हड़प्पा सभ्यता में ऊँचे चबूतरे पर बसे हुए ऊपरी भाग को 'गढ़' कहा जाता था। इस भाग में क्या शामिल नहीं था?

(Chap 2, Class-VI, Old NCERT)

1. सार्वजनिक भवन
2. धान्य-कोठार
3. गोदीवाड़ा
4. कार्यशालाएँ
5. श्रमिक आवास

कूट

(a) 1, 2, 3 और 4 (b) 3 और 5
(c) 3 और 4 (d) केवल 3

↗ उत्तर *(b)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता के 'गढ़' के अंतर्गत सार्वजनिक भवन, धान्य-कोठार तथा कार्यशालाएँ शामिल थीं। गोदीवाड़ा तथा श्रमिक आवास इसमें शामिल नहीं थे। गोदीवाड़ा की अवस्थिति लोथल (गुजरात) तथा श्रमिक आवास की उपस्थिति हड़प्पा (पाकिस्तान) में थी।

हड़प्पा में धान्य कोठारों की इमारतें बड़ी सावधानी से आयताकार रूप में बनाई गई थीं और ये नदियों के नजदीक थीं, इनमें अनाजों को एकत्रित किया जाता था।

7. हड़प्पाई नगरों की विशेषताओं में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन एक शामिल नहीं था? *(Chap 3, Class-VI, Old NCERT)*

(a) नगरों के घर सामान्यत: दो या तीन मंजिल के होते थे।
(b) घर के आँगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे।
(c) घरों में एक अलग स्नानघर होता था।
(d) कुछ घरों में कुएँ होते थे।

↗ उत्तर *(a)*

व्याख्या दिए गए कथनों में से कथन (a) हड़प्पाई नगरों की विशेषताओं में शामिल नहीं था, क्योंकि हड़प्पाई नगरों में घर सामान्यत: दो या तीन मंजिला नहीं, बल्कि एक या दो मंजिला होते थे। घर के आँगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे। अधिकांश घरों में एक अलग स्नानघर होता था और कुछ घरों में कुएँ भी होते थे। कई नगरों में मकानों के बाहर नाले ढके हुए होते थे। इन्हें सावधानी से सीधी लाइन में बनाया जाता था। हर नाली में हल्की ढलान होती थी ताकि पानी आसानी से बह सके।

8. हड़प्पा सभ्यता स्थलों में निर्मित सड़कों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 2, Class-VI, Old NCERT)*

1. मुख्य सड़क करीब दस मीटर चौड़ी होती थी।
2. सड़कों के दोनों ओर मकान बनाए जाते थे।
3. मकानों की नालियाँ सड़कों की नाली से मिली होती थी।
4. मुख्य सड़क को जनपथ कहा जाता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

↗ उत्तर *(b)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता स्थलों में निर्मित सड़कों के संबंध में कथन (1), (2) और (3) सत्य हैं।

हड़प्पा सभ्यता में सड़कें चौड़ी होती थीं। मुख्य सड़क करीब दस मीटर चौड़ी थी, जो आधुनिक नगरों की बड़ी-बड़ी सड़कों के बराबर है। सड़क के दोनों ओर मकान बनाए जाते थे। मकान ईंटों के बने होते थे और उनकी दीवारें मोटी तथा मजबूत होती थीं। दीवारों पर पलस्तर और रंग किया जाता था। मकानों की नालियाँ, सड़कों की नालियों से मिलती होती थीं।

कथन (4) असत्य है, क्योंकि मुख्य सड़क को जनपथ नहीं, बल्कि राजपथ कहा जाता था।

9. हड़प्पाई नगरीय योजना का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थल विशाल स्नानागार था। इसके संबंध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

(a) यह मोहनजोदड़ो तथा धौलावीरा में स्थित है।
(b) यह ईंटों के स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है।
(c) स्नानागार में जल की आपूर्ति कुएँ से होती थी।
(d) विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बना था।

↗ उत्तर *(a)*

व्याख्या दिए गए कथनों में से कथन (a) सत्य नहीं है, क्योंकि मोहनजोदड़ो एक मात्र हड़प्पाई स्थल है, जहाँ विशाल स्नानागार के प्रमाण मिले हैं।

विशाल स्नानागार ईंटों के स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है। यह 11.88 मी लंबा, 7.01 मी चौड़ा और 2.43 मी गहरा है। दोनों सिरों पर तल तक सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। बगल में कपड़े बदलने के लिए कमरे थे। स्नानागार का फर्श पक्की ईंटों का बना है। पास के कमरे में बड़ा-सा कुआँ है। इससे पानी निकालकर हौज में डाला जाता था। यह विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बनाया गया था।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए सुप्रसिद्ध है, जहाँ बाँधों की शृंखला का निर्माण किया गया था और संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था?

(Chap 1, Class-XII, New NCERT), (IAS Pre 2021)

(a) धौलावीरा (b) कालीबंगा
(c) राखीगढ़ी (d) रोपड़

↗ उत्तर *(a)*

व्याख्या गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ में स्थित धौलावीरा एक ऐसा स्थल है, जो अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था। धौलावीरा में जलाशयों का प्रयोग कृषि के लिए जल संचय हेतु किया गया था। बाँधों की शृंखला का निर्माण कर संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल प्रवाहित किया जाता था। इसकी खोज आर. एस. बिष्ट ने वर्ष 1990-91 में की थी। यह हड़प्पा सभ्यता का चौथा विशालतम नगर है।

11. मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार, अनाज रखने का कोठार था, इसके संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

1. यह 45.71 मी लंबा तथा 15.23 मी चौड़ा था।
2. इसका तलक्षेत्र लगभग 838.1025 वर्ग मीटर था।
3. मोहनजोदड़ो के अतिरिक्त हड़प्पा से भी कोठार के साक्ष्य मिले हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 3

➚ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या दिए गए सभी कथन सत्य हैं। मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत कोठार की लंबाई 45.71 मी तथा चौड़ाई 15.23 मी है। इसका तलक्षेत्र लगभग 838.1025 वर्ग मीटर है। हड़प्पा के कोठारों के दक्षिण में खुला फर्श है और उस पर दो कतारों में ईंट के वृत्ताकार चबूतरे बने हुए हैं।

ध्यातव्य है कि इनका उपयोग फसल की निराई के कार्य के लिए होता था, क्योंकि फर्श की दरारों में गेहूँ और जौ के दाने मिले हैं। ये अन्न कोठार नदी के किनारे बनाए गए थे। नदियों के सहारे सुदूर क्षेत्रों से अनाज को लाकर इनमें एकत्रित किया जाता था।

मोहनजोदड़ो के अतिरिक्त हड़प्पा से भी कोठार के साक्ष्य मिले हैं।

12. हड़प्पा सभ्यता के समकालीन किस सभ्यता के भवनों में धूप में सुखाई गई ईंटों का ही प्रयोग हुआ था?

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

(a) मेसोपोटामिया की सभ्यता (b) मिस्र की सभ्यता
(c) बेबीलोन की सभ्यता (d) चीन की सभ्यता

➚ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता के समकालीन मिस्र की सभ्यता के भवनों में धूप में सुखाई गई ईंटों का प्रयोग हुआ है। इसके विपरीत हड़प्पा सभ्यता में आग में पकाई हुई पक्की ईंटों का प्रयोग होता था। इसका प्रमाण मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से मिलता है।

मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी के किनारे हुआ था। यहाँ नील नदी के आस पास की मिट्टी से साँचे में ढालकर ईंटों को बनाया जाता था। इन ईंटों को आग में पकाने के बजाय धूप में सुखाकर प्रयोग में लाया जाता था। इन ईंटों से मकानों का निर्माण किया जाता था।

प्रमुख स्थल

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 1, Class-XII, New NCERT), (MPPSC Pre 2008)

1. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़ तथा कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं।
2. हड़प्पा के लोगों ने सड़कों तथा नालियों के जाल के साथ नियोजित शहरों का विकास किया।
3. हड़प्पा के लोगों को धातुओं के उपयोग का सही पता नहीं था।

उपर्युक्त में से कौन-से/सा कथन सत्य हैं/है?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

➚ **उत्तर** *(a)*

व्याख्या दिए गए कथनों में कथन (1) और (2) सत्य हैं। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़ तथा कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा वर्तमान में पाकिस्तान में अवस्थित हैं, जबकि रोपड़ (पंजाब) और कालीबंगा (राजस्थान) में स्थित है।

हड़प्पा की सड़कों तथा नालियों का निर्माण जाल (ग्रिड) की भाँति किया गया था, जो किसी नियोजित शहर के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि हड़प्पा के लोगों को विभिन्न धातुओं, धातुकर्म तथा धातुओं के उपयोग का पूरा ज्ञान था। वह सोने, चाँदी, ताँबा इत्यादि से परिचित थे। ताँबे के साथ टिन के मिश्रण से कांस्य निर्माण की भी उन्हें जानकारी थी।

14. हड़प्पा सभ्यता के निम्नलिखित में से कौन-सा/से स्थल सिंध क्षेत्र में अवस्थित हैं?

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

1. हड़प्पा
2. मोहनजोदड़ो
3. चान्हूदड़ो
4. सुरकोटडा

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 4 (d) 1, 2 और 3

➚ **उत्तर** *(b)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता के सिंधु क्षेत्र में अवस्थित स्थल मोहनजोदड़ो तथा चान्हूदड़ो हैं। हड़प्पा सभ्यता पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के तट पर स्थित है। यह चान्हूदड़ो व मोहनजोदड़ो से 140 किमी दक्षिण में सिंधु नदी के तट पर पाकिस्तान के सिंधु प्रांत में स्थित है।

सुरकोटडा गुजरात में स्थित हड़प्पाई स्थल, जो हड़प्पा सभ्यता का समुद्रतलीय नगर था।

15. मोहनजोदड़ो के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)

1. इसका अर्थ मृतकों का टीला होता है।
2. यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है।
3. गोदीबाड़ा, मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी विशेषता है।
4. मोहनजोदड़ो के निचले नगर में आवासीय भवनों के साक्ष्य मिलते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1, 2 और 3 (b) 1, 2, 3 और 4
(c) 1, 2 और 4 (d) केवल 4

➚ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या मोहनजोदड़ो के संबंध में कथन (1), (2), (4) सत्य हैं। सिंधी भाषा में मोहनजोदड़ो शब्द का अर्थ- मृतकों का टीला होता है। मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के दाएँ तट पर अवस्थित है। इस विशाल नगरीय संरचना के निम्न नगरों में आवासीय भवनों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

कथन (3) असत्य है, क्योंकि गोदीबाड़ा (आधुनिक बंदरगाह) मोहनजोदड़ो में नहीं बल्कि, लोथल में स्थित था।

16. मोहनजोदड़ो की नालियों के संबंध में किसने कहा था कि ''निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है?''

(Chap 1, Class-XII, New NCERT)

(a) मार्टिमर व्हीलर (b) आर. एल. ऐंटिन
(c) अर्नेस्ट मैके (d) दयाराम साहनी

➚ **उत्तर** *(c)*

व्याख्या मोहनजोदड़ो की नालियों के संबंध में अर्नेस्ट मैके ने कहा था कि "निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।" ये नालियाँ सड़क के किनारे बनीं हुई थीं। इन पर मैनहॉल बना होता था, जिसके माध्यम से नालों की सफाई होती थी। घरों से निकलने वाली नालियाँ मुख्य सड़क पर बनी नालियों में मिलती थीं।

17. निम्नलिखित में से कौन-सा साक्ष्य मोहनजोदड़ो नामक स्थल से प्राप्त हुआ है? *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

1. वृहत् आवासीय परिसर
2. 700 कुओं का साक्ष्य
3. कांस्य की नर्तकी की मूर्ति
4. जैस्पर (एक प्रकार का उपरत्न)

कूट

(a) 1, 3 और 4
(b) 2, 3 और 4
(c) 1, 2 और 3
(d) 2 और 4

उत्तर *(c)*

व्याख्या मोहनजोदड़ो नामक स्थल से वृहत् आवासीय परिसर, 700 कुओं का साक्ष्य तथा कांस्य की नर्तकी की मूर्ति की प्राप्ति हुई है।

जैस्पर (एक प्रकार का उपरत्न) की प्राप्ति मोहनजोदड़ो से नहीं अपितु हड़प्पा से हुई है। 1980 के दशक के मध्य में हड़प्पा के कब्रिस्तान में हुए उत्खनन में एक पुरुष की खोपड़ी के समीप शंख के तीन छल्लों, जैस्पर के मनके तथा सैकड़ों की संख्या में सूक्ष्म मनकों से बना एक आभूषण मिला है।

18. प्रत्येक घर में ईंटों से बना अपना एक स्नानघर होता था, जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी थीं। कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले हैं। कई आवासों में कुएँ थे, जो अधिकांशतः एक ऐसे कक्ष में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिनका प्रयोग संभवतः राहगीरों द्वारा किया जाता था। यह किस नगर की संरचना का विशिष्ट विवरण प्रस्तुत करता है? *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

(a) मोहनजोदड़ो
(b) लोथल
(c) रोपड़
(d) कोटदीजी

उत्तर *(a)*

व्याख्या प्रश्न में वर्णित विवरण का संबंध मोहनजोदड़ो से है। मोहनजोदड़ो का आवासीय विस्तार अन्य हड़प्पा स्थलों से विशिष्ट है। यहाँ आवासों का निर्माण एक विशिष्ट संरचना के अंतर्गत किया गया था, जिसमें घरों में स्नानघर तथा कुओं का निर्माण, इसकी विशिष्टता है।

19. धौलावीरा की वह अद्वितीय विशेषता कौन-सी है, जो अन्य किसी भी हड़प्पाई स्थल से नहीं मिलती? *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

(a) नगर का त्रिस्तरीय विभाजन
(b) नगर का एकल स्वरूप
(c) नगर का द्विस्तरीय विभाजन
(d) उन्नत जल-निकासी प्रणाली

उत्तर *(a)*

व्याख्या धौलावीरा का त्रिस्तरीय विभाजन इसकी अद्वितीय विशेषता है। त्रिस्तरीय विभाजन अन्य किसी भी हड़प्पा स्थल से नहीं मिलता। अन्य हड़प्पाकालीन नगर दो भागों (1) किला या नगर दुर्ग और (2) निचले नगर में विभाजित थे। किंतु इनसे भिन्न धौलावीरा तीन प्रमुख भागों में विभाजित था, जिनमें से दो भाग आयताकार किलेबंदी से पूरी तरह सुरक्षित थे, जबकि तीसरा भाग खुला हुआ था।

20. कालीबंगा के अतिरिक्त वह दूसरा हड़प्पाई स्थल कौन-सा है, जहाँ से दो सांस्कृतिक अवस्थाओं के साक्ष्य मिलते हैं? *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

(a) धौलावीरा
(b) मोहनजोदड़ो
(c) बनावली
(d) चान्हूदड़ो

उत्तर *(c)*

व्याख्या कालीबंगा के अतिरिक्त बनावली वह दूसरा स्थल है, जहाँ से दो सांस्कृतिक अवस्थाओं के साक्ष्य मिलते हैं। पहली संस्कृति प्राक् हड़प्पा (हड़प्पा-पूर्व) तथा दूसरी संस्कृति हड़प्पाकालीन है। हरियाणा के हिसार जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज आर. एस. बिष्ट ने वर्ष 1973 में की थी। यहाँ से सिंधुकालीन मिट्टी के उत्कृष्ट बर्तन, सेलखड़ी की अनेक मुहरें और सिंधुकालीन विशिष्ट लिपि से युक्त मिट्टी की पकाई गई कुछ मुहरें मिली हैं। बनावली में जल निकासी प्रणाली, जो सिंधु सभ्यता की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी, का अभाव था।

21. परिपक्व अवस्था वाले हड़प्पाई स्थलों की पहचान कीजिए *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

1. हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चान्हूदड़ो
2. बनावली, कालीबंगा, मोहनजोदड़ो
3. लोथल, हड़प्पा, चान्हूदड़ो
4. लोथल, कालीबंगा, बनावली

कूट

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1, 2 और 4
(d) 1 ,2, 3 और 4

उत्तर *(d)*

व्याख्या हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चान्हूदड़ो, बनावली, कालीबंगा, लोथल सभी परिपक्व अवस्था वाले हड़प्पाई स्थल हैं। हड़प्पा सभ्यता में परिपक्व अवस्था वाले स्थलों की सूची में उन स्थलों को शामिल किया जाता है, जहाँ से हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ परिपक्व अवस्था में मिलती हैं। इन सभी स्थलों में नगर नियोजन की समरूपता देखने को मिलती है।

ज्ञातव्य है कि हड़प्पाई स्थलों को उनकी बनावट के आधार पर तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है, जो इस प्रकार हैं—प्रथम-प्राक् हड़प्पा, द्वितीय-हड़प्पाकालीन (परिपक्व) तथा तीसरा-परवर्ती हड़प्पा।

22. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है? *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

	स्थल	अवस्थिति
(a)	सुरकोटडा	गुजरात
(b)	चान्हूदड़ो	सिंध
(c)	सुतकांगेडोर	बलूचिस्तान
(d)	धौलावीरा	राजस्थान

उत्तर *(d)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (d) सुमेलित नहीं है, क्योंकि धौलावीरा राजस्थान में नहीं अपितु गुजरात के कच्छ जिले की भचाऊ तालुका में स्थित है।

धौलावीरा की खोज रवींद्र सिंह बिष्ट ने वर्ष 1990-91 में की थी, जो सुरकोटडा, गुजरात में अवस्थित हड़प्पा स्थल है। चान्हूदड़ो सिंध तथा सुतकांगेडोर बलूचिस्तान में अवस्थित हड़प्पा स्थल हैं।

23. सुमेलित कीजिए *(Chap 2, Class-VI, Old NCERT)*

	सूची I (हड़प्पाई स्थल)	**सूची** II (स्थित)
A.	राखीगढ़ी	1. सिंध
B.	मेहरगढ़	2. राजस्थान
C.	कालीबंगा	3. बलूचिस्तान
D.	चान्हूदड़ो	4. हरियाणा

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	4	3	2	1
(c)	3	1	4	2	(d)	4	2	3	1

उत्तर *(b)*

व्याख्या सही सुमेलन-A-4, B-3, C-2, D-1 है।

राखीगढ़ी, हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इसे पूर्व हड़प्पा सभ्यता बस्ती स्थल के रूप में जाना जाता है। इसकी खोज वर्ष 1969 में सूरजभान ने की थी।

मेहरगढ़, पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है। यहाँ से कृषि तथा पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं।

कालीबंगा, राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित है। इस प्राक् हड़प्पा पुरास्थल की खोज सर्वप्रथम ए. घोष ने वर्ष 1953 में की थी।

चान्हूदड़ो, पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। इसका उत्खनन वर्ष 1935 में मैके महोदय ने करवाया था। यहाँ से झूकर संस्कृति के अवशेष मिले हैं।

24. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है? *(Chap 7, Class-XI, Old NCERT)*

	साक्ष्य	**स्थल**
(a)	हलरेखा (कुंड)	कालीबंगा
(b)	जौ के साक्ष्य	बनावली
(c)	चावल के अवशेष	धौलावीरा
(d)	अग्निकुंड	लोथल

उत्तर *(c)*

व्याख्या दिए गए युग्मों में से युग्म (c) सही सुमेलित नहीं है, क्योंकि चावल के अवशेष धौलावीरा से नहीं, बल्कि रंगपुर नामक स्थल से प्राप्त हुए हैं। रंगपुर स्थल अहमदाबाद जिले में स्थित है। क्रमानुसार इसकी खोज वर्ष 1931 में एम. एस. वत्स तथा वर्ष 1953 में एस. आर. राव ने की थी। यहाँ से प्राप्त अन्य अवशेषों मे कच्ची ईंटों के दुर्ग, नालियाँ, मृद्भांड, पत्थर के फलक आदि हैं। यहाँ सैंधव संस्कृति की उत्तरावस्था के दर्शन होते हैं। उल्लेखनीय है कि यहाँ से प्राप्त अवशेषों में न कोई मुद्रा और न ही मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है।

25. हड़प्पाई स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

1. शोर्तुघई सुदूर अफगानिस्तान में स्थित था।
2. शोर्तुघई लाल रंग के लाजवर्द पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था।
3. लोथल कार्नीलियन के लिए प्रसिद्ध था।
4. खेतड़ी अंचल राजस्थान में स्थित था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) केवल 3 (d) 3 और 4 दोनों

उत्तर *(b)*

व्याख्या हड़प्पाई स्थलों के संबंध में कथन (2) असत्य है, क्योंकि शोर्तुघई लाल रंग के लाजवर्द पत्थरों के लिए नहीं वरन् नीले रंग के लाजवर्द (लाजवर्दमणि) के लिए प्रसिद्ध था। इसका आयात हड़प्पावासी सुदूर अफगानिस्तान में स्थित शोर्तुघई से करते थे। यह हड़प्पा सभ्यता का एक व्यापारिक केंद्र था। यहाँ स्थित 'सर-ए-संग' की खानों से लाजवर्दमणि प्राप्त की जाती थी। इसके अतिरिक्त यहाँ से टिन तथा सोना भी प्राप्त किया जाता था।

26. सुमेलित कीजिए *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

	सूची I (तथ्य)	**सूची** II (वर्ष)
A.	ह्वीलर द्वारा हड़प्पा का उत्खनन	1. 1955
B.	एस. आर. राव द्वारा लोथल का उत्खनन	2. 1946
C.	आर. एस. बिष्ट द्वारा धौलावीरा का उत्खनन	3. 1974
D.	एम. आर. मुगल द्वारा बहावलपुर में अन्वेषणों का आरंभ	4. 1990

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	2	1	4	3
(c)	4	3	2	1	(d)	3	2	1	4

उत्तर *(b)*

व्याख्या सही सुमेलन A-2, B-1, C-4, D-3 है।

मार्टिमर व्हीलर ने वर्ष 1946 को हड़प्पा में उत्खनन करवाया था। वे भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल थे। 'सिविलाइजेशन ऑफ द इंडस वैली एंड बियॉण्ड' मार्टिमर ह्वीलर की रचना है, जो वर्ष 1961 में प्रकाशित हुई।

एस.आर. राव के द्वारा वर्ष 1955 में लोथल में खुदाई प्रारंभ करवाई गई थी। एस.आर.राव ने विलुप्त शहर द्वारका के संदर्भ में 'द लास्ट सिटी द्वारका' नामक पुस्तक की रचना की।

आर. एस. बिष्ट ने वर्ष 1990 में धौलावीरा में उत्खनन प्रारंभ करवाया था। धौलावीरा गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित एक हड़प्पा सभ्यता स्थल है।

एम. आर. मुगल, पाकिस्तान के पुरातत्वविद् तथा इतिहासकार हैं, जिन्होंने वर्ष 1974 में बहावलपुर में अन्वेषणों को प्रारंभ करवाया था।

आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन

27. हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है? *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

(a) यहाँ के लोगों ने सर्वप्रथम कपास का उत्पादन किया था।
(b) हड़प्पाई लोगों को लोहे का ज्ञान था।
(c) इस सभ्यता के लोग तिल और सरसों का उत्पादन करते थे।
(d) हड़प्पा सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता भी कहा जाता है।

उत्तर *(b)*

व्याख्या हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में कथन (b) असत्य है, क्योंकि हड़प्पा सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था।

भारत में लोहे का ज्ञान उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू.–800 ई.पू.) के लोगों को हुआ। हड़प्पा सभ्यता के लोग ताँबा, टिन, कांस्य, सोना आदि से परिचित थे। वे टिन तथा ताँबे को मिलाकर कांस्य का निर्माण करते थे। यही कारण है कि सिंधु घाटी सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता भी कहा जाता है।

28. हड़प्पा सभ्यता की कृषि प्रौद्योगिकी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए *(Chap 1, Class-XII, New NCERT)*

1. खेत जोतने के लिए लोहे के हल का प्रयोग होता था।
2. हल को बैलों के द्वारा चलाया जाता था।
3. कालीबंगा में जुते हुए खेत का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।